Copyrighted Material

MAN-EATERS and JUNGLE KILLERS

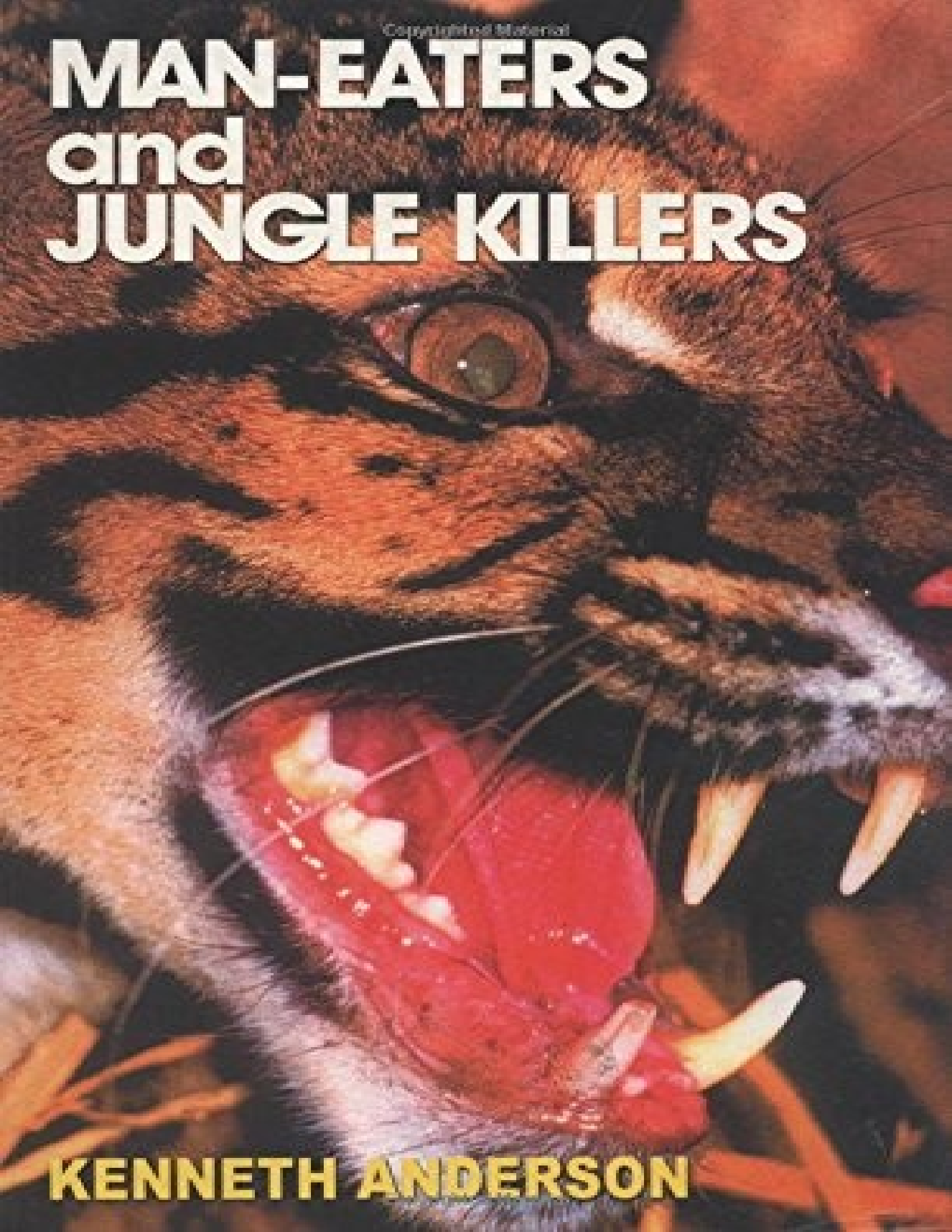

KENNETH ANDERSON

Table of Contents

□□□□□□ □□□
□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□□□
□□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□
□□□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□-□□□□□
□□□□ □□□□□
The Ramapuram Tiger
□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□

[redacted]
[redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted]

Rupa & Co

टाइपसेटिंग कॉपीराइट © रूपा पब्लिकेशन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 2002 यह रूपा पेपरबैक 2002 में पुनर्मुद्रित किया गया था। प्रथम प्रकाशन 2002
चौथा संस्करण 2011
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित, 7/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुन: प्रस्तुत, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

□□□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□-□□□□□

□□□□ □□□□□

The Ramapuram Tiger

□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□

परिचय
समय और सभ्यता निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं, अपने साथ औद्योगीकरण, जीवन स्तर में सुधार और अधिक सुख-सुविधाएँ ला रहे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि इसकी कीमत प्रकृति के प्रति घटती सराहना के रूप में चुकानी पड़ रही है। मानव निर्मित परियोजनाओं और निर्माणों ने प्रकृति के चेहरे को दागदार और विकृत कर दिया है। दिन के हर मिनट, सदियों पुराने, जंगल के विशालकाय वृक्ष, जिनमें से कुछ सदियों पुराने हैं, मनुष्य के हाथों से काट दिए जाते हैं, या तो उनकी लकड़ी के लिए या यांत्रिक संस्कृति के निरंतर विस्तार के लिए जगह बनाने के लिए: एक ऐसी स्थिति जिसमें केवल कुछ ही लोग खुश हैं और जो कभी-कभी सबसे बर्बर अत्याचारों से भरी होती है।
वनों के विशालकाय वृक्षों के विनाश के साथ-साथ अन्य चीजें भी लुप्त हो रही हैं: जंगली जानवर, पक्षी और वे सभी जीव-जंतु जिन्होंने कभी हमारी धरती को सुशोभित किया था। वे सब लुप्त हो रहे हैं, और बहुत तेजी से!
कुछ समय पहले अमेरिकी मैदानों का भी यही हाल था, जो कभी अनगिनत बाइसन का घर हुआ करते थे और अब अपने प्राचीन निवासियों से पूरी तरह खाली हो चुके हैं। अफ्रीका भी तेज़ी से इसी राह पर चल रहा है। वे असंख्य जंगली जानवर कहाँ हैं जो कभी उस अद्भुत भूमि को सुशोभित करते थे? कुछ अभी भी बचे हैं; लेकिन बहुत पहले ही अधिकांश जानवरों की हड्डियाँ अफ्रीका की तेज़ धूप में सूख रही थीं, जो लालची, बेईमान और धन-लोभी शिकारियों की गोलियों से हज़ारों मील तक बिखरी पड़ी थीं—वे लोग जो कभी-कभी व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए हज़ारों की संख्या में विशाल हाथियों का भी शिकार करते थे।
भारत को भी बहुत कुछ खोना पड़ा है, क्योंकि यहाँ के वन्यजीवों की विविधता और संख्या में कमी चिंताजनक रही है। मैं ऐसे इलाकों को जानता हूँ जहाँ 1930 तक रात में बाघ की कराह या तेंदुआ की कर्कश आवाज़ें आम थीं, जिनके बाद हमेशा सांभर और हिरण परिवार के अन्य सदस्यों की चेतावनी भरी पुकार सुनाई देती थी। अब रात सन्नाटे में गुज़रती है, सिवाय शायद लगातार चहचहाते झींगुर के। जहाँ कभी बाघ के पदचिह्न और अन्य जंगली जानवरों के रास्ते सुबह उन जीवों की कहानी बयां करते थे जो रात में वहाँ से गुज़रे थे, वहीं आज कुछ खरगोशों के छोटे-छोटे पदचिह्न शायद यह संकेत देते हैं कि कम से कम वे विलुप्त नहीं हुए हैं।
मैं इस बात पर बहस में नहीं पड़ना चाहता कि किसी देश को उसके वन्य जीवन के लुप्त होने से इतना बड़ा नुकसान कैसे और क्यों होता है। जिसने कभी जंगल को जाना और उससे प्रेम नहीं किया, उसकी शांति और उसके निवासियों के महत्व को नहीं समझा, वह इन भावनाओं को कभी नहीं समझ सकता, न ही उस अपूरणीय क्षति और दुःख को महसूस कर सकता है जो उन लोगों को होता है जो कभी परिचित रूपों की तलाश करते हैं जो अब वहां नहीं हैं, या उन परिचित ध्वनियों को व्यर्थ ही सुनने की कोशिश करते हैं जो कभी उनके कानों को संगीत की तरह लगती थीं, लेकिन अंत में उन्हें एक विनाशकारी सन्नाटा ही मिलता है।
इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह समय आएगा जब आज जो कुछ जीवित प्राणी अपनी प्राकृतिक अवस्था में बचे हैं, वे भी विलुप्त हो जाएंगे, और मनुष्य को तब, और केवल तभी, बहुत देर से एहसास होगा कि उसने कितनी अनमोल संपत्ति को लापरवाही से खो दिया है।
मैं ये कहानियाँ न केवल इस आशा से लिखता हूँ कि ये साहसी लोगों को कुछ हद तक आनंद प्रदान कर सकें, बल्कि इसलिए भी कि ये भारत के विशाल जंगलों में और

उसके आसपास रहने की परिस्थितियों को दर्शा सकें, और यह भी दिखा सकें कि किसी भी व्यक्ति के लिए अपने कौशल और दृढ़ता को 'शिकार' के उत्तम खेल में प्रदर्शित करने का जो सबसे बड़ा अवसर था, वह अब हमेशा के लिए लुप्त होने की प्रक्रिया में है।

[illegible]

[illegible] 4,500 [illegible]

चुका था, लेकिन वे ज़िंदा थे! बाहर जाकर उसके साथ मृतकों में शामिल होने का क्या फायदा! इसलिए वे अंदर ही रहे और उस लंबी रात के बाकी समय तक उसकी चीखें सुनते रहे।
अगली सुबह, मारा के अवशेषों को खोजने का एक अधूरा प्रयास किया गया, और यह प्रयास असफल ही रहता अगर बाघ गाँव से दो सौ गज की दूरी पर झाड़ियों में जाकर बेधड़क अपना पेट न भर लेता। कुएँ पर गई महिला की तुलना में मारा का थोड़ा अधिक अवशेष बचा था। शायद उसका मांस अधिक सख्त था, या शायद बाघ को भूख कम लगी थी। कौन जाने? कम से कम उसका सिर और धड़ तो साबुत थे।
अपने दामाद की दुखद घटना से दुखी होकर, मेरे पुराने मित्र बायरा, जो उस समय केम्पेकराई में थे, अगले दिन पेन्नाग्राम गाँव तक अठारह मील की जोखिम भरी यात्रा पर निकल पड़े। कोई भी उनके साथ नहीं गया, इसलिए वे अकेले ही गए और आदमखोर को देखे या उसकी आवाज़ सुने बिना ही यात्रा पूरी की। पेन्नाग्राम पहुँचकर उन्होंने अपने पुराने परिचित रंगा से मुलाकात की और दोनों बस से बैंगलोर आ गए। उसी रात 9 बजे मुझे दरवाजे पर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं और बाहर जाकर मैं अपने पुराने जंगल के साथियों को फिर से देखकर आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुआ।
इस बीच, सलेम जिले ने शारीरिक, नैतिक और निस्संदेह आध्यात्मिक उत्थान के लिए 'शराबबंदी' को मार्गदर्शक नीति के रूप में अपना लिया था। लेकिन मेरे दोनों आगंतुक, जो सीधे-सादे, ईमानदार वनवासी थे और शारीरिक, नैतिक या आध्यात्मिक रूप से इतने ऊंचे दावे नहीं करते थे, उन्होंने आधा गिलास शुद्ध ब्रांडी पीकर आनंद लिया। इस प्रकार तरोताज़ा होकर, उन्होंने शुरुआत से बात शुरू की, या यूँ कहें कि बायरा ने शुरू की, और आदमखोर के आने और उसके कारनामों का संक्षिप्त इतिहास सुनाया, जैसा कि मैंने आपको बताया है, और अंत में यह स्पष्ट रूप से कहा कि उसके दामाद, मारा का बदला लिया जाना चाहिए और यह काम मुझे करना है।
उस तर्क और मुझ पर उसके बचकाने भरोसे के सामने, मुझे कोई ठोस जवाब नहीं सूझा। तीन दिन बाद मैं पेन्नाग्राम के रास्ते पर था, जहाँ मैंने स्टुडेबेकर कार छोड़ दी। हमने स्थानीय बाज़ार से कुछ सामान खरीदा और कुछ ही घंटों में हम तीनों अठारह मील पैदल चलकर केम्परकाराई नामक छोटे से गाँव की ओर चल पड़े, जहाँ कार नहीं जा सकती थी।
अपनी मंज़िल से कुछ मील पहले हमें पगडंडी पर बाघ के ताज़े पदचिह्न मिले। कई दिनों से इस रास्ते से कोई भी यात्री नहीं गुज़रा था, और पदचिह्न साफ़ थे। मैंने ध्यान से नाप लिया और पाया कि ये पदचिह्न औसत आकार के नर बाघ के थे। इससे यह पता नहीं चला कि पदचिह्न बनाने वाला जानवर बूढ़ा था या सामान्य वयस्क था, और न ही उस समय हममें से कोई यह कह सकता था कि वह आदमखोर बाघ था या महज़ कोई और बाघ जो वहाँ से गुज़र रहा था।
केम्पेकराई के कुछ निवासी बायरा द्वारा मुझे दी गई जानकारी में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दे सके। उनका मानना था कि आदमखोर एक विशालकाय जानवर था, लेकिन ज़ाहिर है, जब आम लोग घोर आतंक की स्थिति में होते हैं, जैसा कि पिछले कुछ हफ्तों से इन बेचारे लोगों के साथ हो रहा था, तो वे अपने उत्पीड़क को अमानवीय चालाकी और अकल्पनीय शारीरिक शक्ति और आकार का मानने लगते हैं।
अब समस्या यह थी: आगे कैसे बढ़ा जाए और क्या किया जाए? जवाब था: शिकार का इंतज़ार करना, या किसी जीवित जानवर को चारा बनाना। इस बाघ ने ग्रामीणों की एक भी गाय या अन्य पालतू जानवर को नहीं मारा था। कम से कम अभी तक तो इसने

केवल मनुष्यों को ही मारा था। सवाल यह था: क्या यह किसी जानवर को चारा बनाएगा, या फिर चारा मनुष्य होना चाहिए? जिसका एकमात्र जवाब यही था कि अगर चारा मनुष्य हो, तो वह मेरे अलावा कोई और नहीं हो सकता, एक ऐसा जवाब जिसके बारे में सोचना भी मुझे बेहद नापसंद था।
बायरा, रंगा और मैंने लगातार चाय पीते हुए गहन विचार-विमर्श किया और अंततः एक समाधान निकलने लगा। मैंने सोचा कि हमें जानवरों को चारा बनाकर देखना चाहिए, लेकिन उनका मानना था कि इंसान को चारा बनाकर—यानी मुझे—तुरंत परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। मेरी दिली इच्छा थी कि वे किसी और निष्कर्ष पर पहुँचे होते।
तीन सदस्यीय समिति में, उनमें से कोई भी दो सदस्य भारी बहुमत बना लेते हैं। तीसरे सदस्य को झुकना ही पड़ता है, लेकिन मैं अपनी बात मनवाने में कामयाब रहा और इस बात पर सहमत हो गया कि मानव चारा के साथ-साथ, कुछ चुनिंदा स्थानों पर कुछ युवा बैलों को अतिरिक्त आकर्षण के रूप में आज़माने में कोई बुराई नहीं है।
केम्पेकराई में भैंसें नहीं मिलीं, इसलिए मैंने दो बैल खरीदे। एक को हमने उस जगह बांध दिया जहाँ हमें जानवरों के पैरों के निशान मिले थे, और दूसरे को घाटी के निचले हिस्से में बहने वाली धारा के किनारे बांध दिया। मैं कुएँ की पत्थर की मुंडेर पर बैठ गया, मेरी पीठ उस लकड़ी के खंभे से टिकी थी जिस पर पानी निकालने के लिए रस्सी लगी थी। मैंने रस्सी के एक सिरे पर एक धातु का घड़ा बांध दिया, जिसे मैंने अपने पास मुंडेर पर रखा। ताज़ा पानी पीना हमेशा बोतल के पानी से बेहतर होता है।
कुएँ से लगभग पचास गज की दूरी पर जंगल चारों ओर फैला हुआ था, सिवाय एक दिशा के। यहाँ किसी ने एक दर्जन या उससे अधिक पपीते के पेड़ लगाए थे। कुएँ से कभी-कभार पानी मिलने से इन पेड़ों के चारों ओर घास की झाड़ियाँ उग आई थीं, जिनमें कहीं-कहीं कुछ छोटी झाड़ियाँ भी थीं। दिन के उजाले में ये झाड़ियाँ नगण्य प्रतीत होती थीं, लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती और अंधेरा होने लगता, मुझे लगने लगा कि ये आदमखोर सांप के लिए आने का एक आसान रास्ता बन गई हैं, जो आसानी से पेट के बल रेंगते हुए मेरे पास आ सकता है, और मुझे उसकी मौजूदगी का पता भी नहीं चलेगा।
जब यह विचार मेरे मन में आया, तो मैंने कुएं के दूसरी तरफ अपनी स्थिति बदल ली, और सामने वाले लकड़ी के सीधे खंभे को पीठ के सहारे के रूप में इस्तेमाल किया, ताकि अब मेरा मुख पपीतों की ओर हो।
मैंने खुद को सबके सामने लाने का फैसला इसलिए किया क्योंकि हम सौभाग्य से पूर्णिमा से ठीक पहले वहाँ पहुँचे थे। चाँद का उदय लगभग सूर्यास्त के समय ही हुआ, लेकिन मैं भूल गया था कि उस अंधेरे कुएँ पर अपनी रोशनी बिखेरने से पहले चाँद को पूरब की पहाड़ियों की चोटी तक पहुँचना था। ऐसा रात 8 बजे के बाद ही हो पाता और मैंने अपने जीवन के सबसे बुरे नब्बे मिनट उस बहुप्रतीक्षित चाँद की पहली किरणों का इंतज़ार करते हुए बिताए—मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता कि मैं कितना बेसब्र और बेचैन था।
इस अनुभव ने मुझे गुम्मलपुर की झोपड़ियों के सामने उस भयानक पैंथर की प्रतीक्षा में बिताए उन खौफनाक पलों की याद दिला दी, और उस दिन की भी याद दिला दी जब मैं सुदूर चमाला वन क्षेत्र में सागौन के पेड़ की ओर पीठ करके बैठा था, उसी तरह के आदमखोर की एक झलक पाने की उम्मीद में;* और मैं सोचने लगा कि आखिर किस मूर्खता ने मुझे फिर से ऐसी मुश्किल स्थिति में डाल दिया था। फिर मेरी समझ ने मुझे बताया कि शायद यही एकमात्र रास्ता था।

में झुक गया था, क्योंकि बाघ मेरे दाहिनी ओर पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैंने तुरंत खुद को संभाला, लेकिन अब मुझे राइफल को अपने बाएं कंधे पर टिकाना पड़ा।
पिछले दो पैराग्राफ पढ़ने में आपको जितना समय लगा, उस रात की घटनाओं में लगे वास्तविक समय से कहीं अधिक समय लगा। जैसा कि मैंने कहा, मैं ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर बैठा था। एक सामान्य बाघ नाक से पूंछ तक लगभग नौ फीट लंबा होता है। उसकी पूंछ की लंबाई घटाकर और उसके आगे के पंजे की लंबाई जोड़कर, हम लगभग आठ फीट की अनुमानित लंबाई तक पहुँच सकते हैं, जो किसी भी बाघ या आदमखोर बाघ की 'फैलने की सीमा' को दर्शाती है। पंद्रह फीट की मूल ऊंचाई में से इन आठ फीट को घटाने पर लगभग सात फीट का अंतर आता है, जो लगभग उतनी ही दूरी थी जितनी बाघ उस रात पेड़ के तने पर चढ़ने में सफल हुआ था। मुझे पकड़ने की हड़बड़ी में उसने अपना एक पंजा बढ़ाया, और जैसे ही उसके नुकीले पंजे कैंप-चेयर की सीट के कैनवास और संयोगवश मेरी पैंट को चीरते हुए अंदर घुसे, बाघ अपना संतुलन खो बैठा और पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। वहीं, अपनी पीठ बचाने की चिंता में, मैंने सहज रूप से खुद को कुर्सी से आधा ऊपर उठा लिया। मैं भाग्यशाली था कि मैंने अपनी राइफल नहीं गिराई और बाघ के पीछे नहीं भागा।
आदमखोर जानवरों, चाहे बाघ हों या तेंदुआ, के बारे में एक अनोखी बात यह है कि वे देखने में कायर लगते हैं, हालांकि वे इंसानों पर हमला करके उन्हें खा जाते हैं। लगभग हमेशा ही, ऐसे हमले पीछे से किए जाते हैं, और तब होते हैं जब शिकार अपने हमलावर की मौजूदगी से अनजान होता है। दरअसल, बहुत कम ही ऐसा हुआ है कि किसी आदमखोर जानवर ने सामने से हमला किया हो या किसी ऐसे व्यक्ति पर झपट्टा मारा हो जो उसकी मौजूदगी से वाकिफ हो और उसका सामना कर रहा हो।
उस रात ऐसा ही हुआ, जैसे ही वह पीछे की ओर धरती पर गिरा, नरभक्षी को एहसास हुआ कि उसकी उपस्थिति का पता चल गया है, और जमीन पर उतरते ही, एक छलांग और गुर्राहट के साथ, वह आसपास की लैंटाना झाड़ियों में गायब हो गया।
मैं यह नहीं कह सकता कि यह हमारे सौभाग्य का ही परिणाम था कि उसने ऐसा किया, क्योंकि यद्यपि मुझे उसकी उपस्थिति का आभास हो चुका था और मैं उसके लिए तैयार था, फिर भी उस बेहद कठिन कोण से, ठीक मेरे नीचे, निशाना लगाने की कोशिश में मेरा संतुलन बिगड़ सकता था या राइफल गिर सकती थी। खैर, वह पलक झपकते ही चला गया, उतनी ही अचानक और अप्रत्याशित रूप से जितना वह आया था। मेरी मौजूदगी का पता चल जाने के बाद, अब चुपचाप या बिना हिले-डुले रहने का कोई फायदा नहीं था। नुकसान का जायजा लेते हुए मैंने कुर्सी के कैनवास पर तीन पंजे के निशान देखे, हर एक लगभग पाँच इंच लंबा था, जहाँ बाघ के अगले पंजे ने खरोंचा था। इनमें से दो निशान मेरी पैंट की सीट को भेद गए थे—और कुछ हद तक मेरे शरीर को भी। त्वचा में तेज़ दर्द हो रहा था, जो मुझे इस बात का एहसास दिला रहा था।
आम तौर पर, ऐसी घटना हंसमुख लोगों के मन में हंसी पैदा कर देती, लेकिन मैं उन्हें याद दिलाता कि सभी मांसाहारी जानवरों के पंजे सड़े हुए मांस से निकले जहरीले बैक्टीरिया से भरे होते हैं, और नरभक्षी भी इस नियम का अपवाद नहीं है, क्योंकि यह मांस इंसान का होता है। कुर्सी का कैनवास और मेरी पैंट का कपड़ा इतना मोटा नहीं था कि इस सारे जहरीले पदार्थ को सोख सके, इसलिए मेरे घाव में संक्रमण होने की कुछ संभावना थी।
मैं अपने साथ प्राथमिक उपचार की कई सामग्रियाँ लाया था, जिनमें प्रोकेन पेनिसिलिन का अच्छा स्टॉक और मेरी पाँच सीसी की हाइपोडर्मिक सिरिंज शामिल

‘दूर हटो! भागो!’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा। भालू रुका, पत्थरों के ऊपर से चढ़ा और पत्थरों के बीच से नीचे मेरी तरफ देखा।
‘आ-र, व्र-र्र!’ वह गुर्राया। ‘निकल जा बेवकूफ!’ मैं गुर्राया। ‘व्र-ऊफ! व्र-ऊफ! व्र-ऊफ!’ उसने जवाब दिया और पत्थरों पर बेतरतीब ढंग से चढ़ता हुआ, मलबे पर ठोकर खाता हुआ, किनारे पर चढ़ता हुआ सूखे बांसों के बीच से गिर पड़ा। भालू के शोर मचाते हुए चले जाने के मुश्किल से दस मिनट ही बीते थे कि मुझे एक बहुत ही हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, किसी भारी जानवर के गद्देदार पैर की धीमी आहट। उस आवाज़ को शब्दों में बयान करना लगभग नामुमकिन है, और कागज़ पर तो और भी मुश्किल। मैं उसका सबसे सटीक वर्णन ऐसे कर सकता हूँ जैसे किसी मुलायम तकिए को सोफे पर फेंके जाने पर आने वाली हल्की सी आवाज़।
बाघ आ चुका था और चुपचाप मेरे पीछे नदी के किनारे बिखरे मलबे के ढेर के किनारे से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था। वह बड़ी सावधानी से उस पर से अपना रास्ता बना रहा था।
क्या वह डमी पर हमला करेगा? क्या वह मेरे सामने से गुजरेगा? ये सवाल मेरे दिमाग में घूम रहे थे, जैसे-जैसे मैं आगे की स्थिति का इंतजार कर रहा था। मेरी नसें उत्सुकता से तनावग्रस्त थीं।
चाँद निकल चुका था, लेकिन उसकी किरणें इमली के घने पत्तों की छाया तक नहीं पहुँच पा रही थीं। पुतला मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे पता था कि बाघ उसे साफ देख सकता था।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा—कितनी देर तक, यह मैं नहीं कह सकता। फिर मेरे सिर के ऊपर से एक पत्थर के लुढ़कने की खनक सुनाई दी। किसी ने भी उस दिशा से हमले की उम्मीद नहीं की थी; लेकिन मेरे हाल ही के मेहमान, भालू ने पहले ही दिखा दिया था कि अप्रत्याशित भी हो सकता है। अब मेरे ऊपर बाघ की मौजूदगी से अप्रत्याशित घटना फिर से दोहराई जा रही थी। किस बात ने उसे नकली वस्तु को नज़रअंदाज़ करके सीधे उस जगह पर आने के लिए प्रेरित किया जहाँ मैं लेटा था, यह एक रहस्य था। बहुत संभव है कि बाघ भालू को देख रहा था, उसके अजीब व्यवहार को देखा था, उसकी जल्दबाजी में जाने पर ध्यान दिया था और जाँच करने आया था। इससे भी अधिक संभव है कि भालू के व्यवहार ने बाघ को मानव हस्तक्षेप का संदेह पैदा किया हो, जिसकी पुष्टि करने के लिए वह स्वयं आया हो। या शायद पहिया संयोगवश उस सबसे छोटे रास्ते पर स्थित था जिसका अनुसरण करते हुए बाघ नकली वस्तु तक पहुँच रहा था।
कारण चाहे जो भी हो, बाघ अब मुझसे केवल दो गज की दूरी पर था और मेरे ठीक ऊपर था।
ये सारे विचार मेरे मन में दौड़ रहे थे, तभी मुझे बाघ की साँसों की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। फिर वह बड़ी फुर्ती से पहिए को थामे रखने वाले बड़े- बड़े पत्थरों में से एक के ऊपर से गुजरा और मेरी तरफ नीचे देखने लगा।
इस बीच मैं निष्क्रिय नहीं बैठा था। जितना हो सका, मैंने खुद को समेटते हुए, आधा पीठ के बल लेटकर बाघ को ऊपर की ओर देखा। मैंने राइफल को अंदर और पीछे की ओर तब तक खींचा जब तक कि उसका बट छेद के किनारे से न टकरा गया। मैंने आपको पहले ही बताया है कि यह छेद लगभग चार फीट चौड़ा और लगभग उतना ही गहरा था। इसलिए राइफल को पूरी तरह ऊपर की ओर निशाना लगाना असंभव था। मैं ज़्यादा से ज़्यादा छेद के तल से साठ डिग्री से थोड़ा अधिक का कोण ही बना पाया। दुर्भाग्य से, बाघ उस दिशा में नहीं था जिस दिशा में राइफल का मुंह था, बल्कि वह उसके पीछे और ठीक उस जगह के ऊपर खड़ा था जहाँ राइफल का बट छेद के किनारे से टकरा रहा था।

है। टेलीग्राम से यह अनुमान लगाते हुए कि मेरे वहाँ पहुँचने तक चार दिन बीत चुके होंगे, मैंने जवाब भेजा और अपने साथियों को केम्पेकराई लौटने और वहाँ आगे की घटनाओं का इंतज़ार करने के लिए कहा, जिनकी सूचना टेलीग्राम द्वारा ही दी जानी थी।
छह दिन और बीत गए, जब मुझे दूसरा टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि चिनार नदी पर स्थित मोराप्पुर नामक छोटे से गांव से सोपथी की ओर जा रहे एक काफिले के आखिरी बैलगाड़ी चालक पर एक बाघ ने हमला कर दिया था।
यह निस्संदेह वही आदमखोर सांप था। एक घंटे के भीतर मैं कार से धर्मपुरी के लिए रवाना हो गया, जहाँ मैंने अपने दो साथियों को साथ लिया। हम पेन्नाग्राम तक गए, जहाँ हमने कार छोड़ दी और लगभग बारह मील की पैदल यात्रा करके मोरप्पुर पहुँचे, रास्ते में चिनार नदी और सोपथी से गुज़रे।
इसी बीच मुझे पता चला कि बाघ के हमले का शिकार हुए गाड़ीवाले ने अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी से कूदकर जुए पर छलांग लगाई और फिर गाड़ी खींच रहे दो बैलों के बीच आ गया। उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और उसकी चीखों में गाड़ी के दूसरे गाड़ीवालों ने भी साथ दिया। इसके बाद बाघ भाग गया।
मैंने मोरप्पुर में एक गाड़ीवाले से बात की। उसने बताया कि बाघ अचानक उसकी गाड़ी के पीछे प्रकट हुआ, जो कतार में सबसे पीछे थी, और पीछे से उस पर कूदने की कोशिश की। तब वह अपने बैलों के बीच छिप गया। जब मैंने उससे पूछा कि बाघ गाड़ी में चढ़ने के अपेक्षाकृत आसान काम में सफल क्यों नहीं हुआ, तो उसने बताया कि वह आधा ही अंदर कूदा था और उसने आगे देखने का इंतजार नहीं किया। इसी बीच, सोपथी से हमारा पीछा करते हुए आए यात्रियों के एक समूह ने खबर दी कि उन्हें चिनार नदी की ओर जाने वाले ताजे बाघ के पदचिह्न मिले हैं, जो पिछली रात के हैं।
यह सुनकर हम जल्दी से सोपथी लौट आए, और हमें पदचिह्न ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। चिनार नदी में पानी चांदी की धारा की तरह बह रहा था, किनारों से किनारों तक लहराता हुआ, और नरम, गीली रेत में हमने साफ देखा कि जिस बाघ ने ये निशान बनाए थे, वह बुरी तरह लंगड़ा रहा होगा। शरीर का लगभग सारा भार बाएं अगले पैर पर था, दाहिना पैर हर कदम पर रेत पर बहुत हल्का रखा जा रहा था।
मैंने पहले भी कहा है कि 'स्पाइडर वैली' इसी स्थान पर चिनार नदी से मिलती है। आधा मील नीचे की ओर, और जिस दिशा में बाघ गया था, उसी दिशा में नदी के मध्य में एक छोटी, लंबी चट्टान थी। यह नदी के तल से लगभग चार फीट ऊपर उठी हुई थी और लगभग चालीस फीट लंबी और आठ फीट चौड़ी थी। मैंने उस रात उस चट्टान पर बैठने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि बाघ चिनार नदी के ऊपर वापस आ सकता है और मुझे मेरी ऊँची जगह पर देख सकता है।
रंगा की पगड़ी, पुराना भूरा कोट और धोती उधार लेकर, मैंने तीनों को पहन लिया, धोती को अपने कपड़ों के ऊपर पहना, और शाम 5:30 बजे तक चट्टान पर बैठ गया। चूंकि रंगा और बायरा अकेले मोरप्पुर लौटने से डर रहे थे, इसलिए उन्होंने इस इलाके में चिनार के किनारे उगने वाले विशाल मुट्ठी वृक्षों की ऊँची डालियों पर आराम से रात बिताने का फैसला किया।
उस समय रातें अंधेरी होती थीं, लेकिन चट्टान पर मेरी स्थिति से, और चूंकि चिनार का जंगल उस स्थान पर लगभग 100 गज चौड़ा था, मैं सफेद रेत पर भरोसा करता था कि वह तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित करके बाघ की आकृति को किसी भी दिशा से प्रकट कर देगी। लंगड़ापन के कारण थोड़ी परेशानी के अलावा, मैं

लगभग बीस गज दूर खड़ा बाघ, मेरी हलचल देखकर समझ गया कि उसकी मौजूदगी का पता चल गया है। एक पतली काली लकीर की तरह, उसकी पूंछ उसके पीछे हिल रही थी। हमला करने के लिए तैयार होते ही उसका धुंधलापन और भी स्पष्ट हो गया। मेरी टॉर्च की रोशनी सीधे उसके गुर्राते, चपटे सिर पर पड़ी। तभी राइफल चली, उसके छलांग लगाने से ठीक एक पल पहले।
मेरी गोली लगते ही वह उछला और आगे की ओर भागा। मेरी जान इसलिए बच गई क्योंकि मशाल बुझी नहीं थी और मैं दूसरी गोली चला सका। तब तक वह चट्टान तक पहुँच चुका था।
उसके पहले के घाव या मेरी हालिया गोलियों की वजह से—उस समय मैं यह नहीं बता सकता था कि कौन सी वजह थी—वह ऊपर नहीं चढ़ पाया। मेरी तीसरी गोली, जो बिल्कुल किनारे से चलाई गई थी, उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में जाकर लगी, और उस हमले को रोक दिया जो लगभग मुझ तक पहुँचने ही वाला था, और वह चिनार की रेत पर लुढ़क गया, उसका अंत हो गया।
सोपथी लौटते समय सीटी बजाते हुए, मैंने रंगा और बायरा को मुट्ठी के पेड़ों से नीचे उतारा, जिन पर वे बैठे थे। मेरी गोलियों की आवाज सुनकर और नदी के किनारे से मुझे आते देख, वे समझ गए कि मैंने बाघ को मार गिराया है।
अगली सुबह हमने उसे औसत कद-काठी का, कुछ दुबला-पतला नर बाघ पाया। सत्रह दिन पहले गाड़ी के पहिए के नीचे से चलाई गई मेरी गोली ने अनुमान से कहीं अधिक नुकसान पहुँचाया था, क्योंकि वह उसके दाहिने कंधे से होकर गुज़री थी, हड्डी को तोड़ते हुए बाहर निकल गई थी। लेकिन घाव अच्छी हालत में था, और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अंततः ठीक हो जाता, हालाँकि बाघ अपंग ही रहता। पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके खुले मुँह से होकर गर्दन से बाहर निकल गई थी, जिससे एक बड़ा छेद हो गया था। फिर भी, वह लड़ता रहा। दूसरी गोली ऊपर की ओर गई, बाएं कंधे के पीछे से अंदर घुसी, फेफड़ों से नीचे की ओर गुज़री और फिर बाहर निकल गई। फिर भी, वह लड़ता रहा। केवल मेरी आखिरी गोली, जो उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से से होकर गुज़री, ने उसके उस मस्तिष्क को चकनाचूर कर दिया था जो उसकी अदम्य भावना को शक्ति प्रदान करता था।
इस बाघ को आदमखोर किसने बनाया? यह वह पहेली है जिसे हर शिकारी किसी आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या तेंदुआ, को मारने के बाद सुलझाने की कोशिश करता है, न केवल अपनी जानकारी के लिए, बल्कि आम जनता को शिक्षित करने के लिए भी। और यह जानवर भी इस अटल नियम का अपवाद नहीं था कि मानव जाति ही बाघ को आदमखोर बनाती है। उसके दाहिने पैर में, उसी जगह पर एक पुराना गोली का घाव था जहाँ मुझे हमारी पहली मुठभेड़ में चोट लगी थी, बस थोड़ा नीचे; कोहनी के जोड़ में एक चपटी सीसे की गोली फंसी हुई थी, जो एक साल या उससे भी पहले किसी बंदूक से चलाई गई थी।
उस सबसे महत्वपूर्ण जोड़ में फंसी इस बाहरी वस्तु ने न केवल बाघ को असहनीय पीड़ा दी, बल्कि जंगली जानवरों और मवेशियों जैसे अपने वैध भोजन को मारने में उसकी गति को भी काफी हद तक बाधित कर दिया। इसने उसके दाहिने पैर के उपयोग को कमजोर कर दिया था, जो उसके सामान्य शिकार को पकड़ने और नीचे खींचने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निस्संदेह, यही एकमात्र कारण था जिसने बाघ को भूख से बचने के लिए मनुष्यों को भोजन के रूप में अपनाने के लिए मजबूर किया।

* नौ नरभक्षी और एक बदमाश देखें

दो

आलम बक्स और बड़ा काला भालू अब मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, वह एक सुस्त भालू के बारे में है। एक काफी बड़ा, काला और खूंखार भालू।
जैसा कि मैंने अन्य कहानियों में भी उल्लेख किया है, सभी भालू उत्तेजित, अविश्वसनीय और चिड़चिड़े स्वभाव के जानवर होते हैं। वे बिना किसी स्पष्ट कारण के लोगों पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं, बशर्ते कि कोई व्यक्ति उनके बहुत करीब से गुजरे, चाहे भालू सो रहा हो, खाना खा रहा हो या बस टहल रहा हो। इसलिए स्थानीय लोग भालुओं से दूरी बनाए रखते हैं; हाथी के साथ-साथ, वे जंगल में रहने वाले लोगों के बीच सबसे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं। यह विशेष भालू अपने बेवजह और असाधारण रूप से गुस्सैल स्वभाव और आक्रामकता के कारण अपनी प्रजाति में सबसे अलग था। वह लोगों पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करता था, यहाँ तक कि जब वह उन्हें काफी दूर से देखता था तब भी। उसके असामान्य व्यवहार का कारण समझाना कठिन था। उसके बारे में कई कहानियां प्रचलित थीं, जो जितनी अलग-अलग थीं उतनी ही असाधारण भी। सबसे सरल कहानी यह थी कि वह पूरी तरह पागल था। अन्य कहानियों में कहा गया कि वह एक मादा भालू थी जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए थे और उसने मानव जाति से बदला लेने की कसम खाई थी। मुझे लगता है कि किसी समय किसी इंसान ने उस भालू को घायल कर दिया था। शायद सबसे अविश्वसनीय कहानी यह थी कि लगभग एक साल पहले, इस भालू ने एक भारतीय लड़की को साथी बनाने के लिए अगवा कर लिया था, जब वह उस पहाड़ी पर बकरियों का झुंड चरा रही थी जहां वह रहता था। कहानी आगे कहती है कि पूरा गांव लड़की को बचाने के लिए एकजुट हो गया था, और अंततः वे उसे बचाने में सफल हो गए, जिससे भालू बहुत नाराज हो गया; इसके बाद उसने प्रतिशोध में मनुष्यों पर हमला करना शुरू कर दिया।
कारण चाहे जो भी हो, इस भालू के नाम पीड़ितों की एक लंबी सूची दर्ज थी; मुझे बताया गया कि लगभग बारह लोग मारे गए थे और दो दर्जन अन्य घायल हुए थे। अन्य भालुओं की तरह, वह भी हमेशा शिकार के चेहरे पर हमला करता था, जिसे वह अपने बेहद लंबे और शक्तिशाली पंजों से नोंच-नोंच कर फाड़ देता था। इसके अलावा, वह जानबूझकर बेरहमी से काटता भी था ताकि अपने काम में सफल हो सके। घायलों में से लगभग आधे लोगों की एक या दोनों आंखें चली गई थीं; कुछ की नाक कट गई थी, जबकि कुछ के गाल बुरी तरह से नोंच दिए गए थे। मारे गए लोगों के चेहरे लगभग धड़ से अलग हो गए थे। स्थानीय अफवाहों के अनुसार, भालू अपने शिकारों को खाने लगा था, जिनमें से आखिरी तीन को उसने आधा खा लिया था। मुझे इन अफवाहों की सच्चाई की पुष्टि करने का अवसर नहीं मिला, लेकिन मुझे लगा कि ये कुछ हद तक सच हो सकती हैं, क्योंकि भारतीय सुस्त भालू कभी-कभी सड़े-गले मांस को भी खा लेता है, हालांकि आम तौर पर वह पूरी तरह शाकाहारी होता है और केवल जड़ वाली सब्जियां, फल, शहद, दीमक और इसी तरह के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ही खाता है। इसलिए ताजा मांस, यहां तक कि मानव मांस भी, उसके लिए शायद अवांछित न हो।
यह भालू मूल रूप से नागवारा पहाड़ियों में रहता था, जो बैंगलोर से लगभग 105 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित अरसिकेरे नामक बड़े शहर के पूर्व में और मैसूर राज्य में स्थित हैं।

[illegible]

तीन

मामंदुर नरभक्षी
यह जानवर मादा थी, और वह भी कम उम्र की; इसलिए उसके नरभक्षी बनने का कोई स्पष्ट कारण नहीं था। लेकिन चूंकि उसने चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की मृत्यु के कुछ ही समय बाद अपने हिंसक कारनामों को अंजाम देना शुरू किया— जिसके जीवन की कहानी मैंने 'चमाला घाटी का धारीदार आतंक'* नामक कहानी में बताई है—और वह आंशिक रूप से उसी इलाके में सक्रिय थी, इसलिए शायद स्थानीय अफवाहों में कुछ सच्चाई थी कि वह उस खूंखार हत्यारे की साथी थी। एक और, और उतनी ही संभावित व्याख्या यह थी कि वह एक बड़ी हो चुकी शावक थी, जिसने अपने दुष्ट पिता से नरभक्षी और नरभक्षी बनने की बुरी प्रथा सीखी थी।
उसके अतीत चाहे जो भी रहा हो, इस बाघिन ने पहली बार किसी इंसान को मारने की कोशिश तब की जब उसने एक चरवाहे पर हमला किया। चरवाहा अपने मवेशियों के झुंड में से एक दुधारू गाय को बचाने की कोशिश कर रहा था, जिसे बाघिन ने चुनकर हमला किया था और जिसकी गर्दन उसने बड़ी कुशलता से तोड़ दी थी। चरवाहे ने बड़ी बहादुरी से, लेकिन मूर्खता से, बाघिन को गिरी हुई गाय से दूर भगाने की कोशिश की। वह चिल्लाता रहा और हवा में अपना डंडा लहराता रहा। आमतौर पर ऐसी तरकीबें बाघ को डराकर भगा देती हैं, लेकिन इस मामले में इसका उल्टा असर हुआ। भागने के बजाय, बाघिन चरवाहे की ओर दौड़ी और उनके बीच की बीस गज की छोटी सी दूरी को अविश्वसनीय गति से तय कर लिया। चरवाहा दुम दबाकर भागा, लेकिन बाघिन ने अपने अगले पंजे से उस पर ऐसा वार किया जिससे उसके कंधे से लेकर नितंबों तक की त्वचा फट गई। वार के वजन से वह जमीन पर गिर पड़ा; लेकिन मनुष्य पर अपने इस पहले हमले में, बाघिन ने जाहिर तौर पर यह मान लिया कि उसने पर्याप्त नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि वह उस गाय की ओर वापस मुड़ गई जिसे उसने अभी-अभी मारा था।
होश में आने पर चरवाहे को मात्र चालीस गज की दूरी पर बाघिन द्वारा गाय को नोचने की हड्डियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी। सौभाग्य से, उसने अपना धैर्य बनाए रखा और उठने की कोशिश नहीं की। संभवतः ऐसा कोई भी हिलना-डुलना दूसरे हमले को उकसा सकता था, जो इस बार घातक साबित हो सकता था।
इसलिए वह जिस तरह गिरा था, उसी तरह मुंह के बल पड़ा रहा, लेकिन चुपके से अपने सिर को बहुत धीरे-धीरे और थोड़ा सा हिलाकर, वह बाघिन को भोजन करते हुए देखने में सक्षम था।
बाद में उसने मुझे बताया कि वह अगले एक घंटे को जीवन भर नहीं भूलेगा। ऐसा लगता है कि बाघिन बीच-बीच में खाना बंद कर देती, अपना सिर उठाती और उसकी तरफ देखती। एक बार तो वह खड़ी भी हो गई और उसकी तरफ कुछ कदम भी बढ़ाए। बेचारा डर के मारे चीखने ही वाला था और लगभग हिलने की गलती कर बैठा। शायद उसी डर ने उसकी जान बचा ली, क्योंकि वह हिल नहीं पा रहा था। सौभाग्य से, बाघिन ने अपना इरादा बदल दिया और गाय के पास लौट गई।
चरवाहे ने मुझे बताया कि एक घंटे से अधिक समय बीतने के बाद ही बाघिन ने आखिरकार तय किया कि उसका पेट भर गया है। फिर वह आराम से अपने पिछले पैरों पर बैठ गई, अपने अगले पंजों को अच्छी तरह चाटा और अपना चेहरा साफ करने लगी। लेटे हुए चरवाहे पर एक आखिरी नजर डालकर, वह आखिरकार खड़ी हुई, संतुष्टि से अंगड़ाई ली और जंगल की ओर चल पड़ी।

‘बेवकूफ आदमी’, मैंने सोचा। ‘सुबह-सुबह बाहर की रोशनी पर ध्यान देने और स्टेशन जाते समय अंदर की रोशनी पर वापस आने के बजाय, उसने अंदर की रोशनी पर समय बर्बाद किया, और फिर काफी देर हो जाने पर बाहर की रोशनी पर गया।’
दाईं ओर मुड़कर, मैं तटबंध के किनारे-किनारे 'बाहरी' सिग्नल की ओर चलने लगा, जो एक मोड़ पर दिखाई दिया। चलते-चलते मैंने पटरियों के आसपास उस हमले के निशान खोजने की कोशिश की जो उस समय हुआ होगा जब मार्गदर्शक बाहरी सिग्नल की ओर बढ़ रहा था। मुझे कुछ नहीं मिला। फिर मैं 'बाहरी' सिग्नल के नीचे पहुँचा और ऊपर देखा। बत्ती जल रही थी!
तो उस व्यक्ति पर हमला 'बाहरी' सिग्नल की देखभाल करने के बाद वापस लौटते समय हुआ था, न कि उससे पहले। इसके अलावा, 'भीतरी' सिग्नल की बत्ती भी जल रही थी। शायद उसने पहले उस बत्ती की देखभाल नहीं की थी, जैसा कि मैंने पहले सोचा था। शायद उसने पहले बाहरी सिग्नल जलाया, फिर भीतरी, और भीतरी सिग्नल और स्टेशन यार्ड के बीच कहीं उस पर हमला हुआ हो।
लेकिन क्या यह संभव था, इस तथ्य को देखते हुए कि स्टेशन से लेकर 'आंतरिक' सिग्नल तक का सारा इलाका, और उससे थोड़ा आगे तक का क्षेत्र भी, खुली खेती योग्य भूमि थी? क्या कोई बाघ, चाहे वह आदमखोर ही क्यों न हो, दिन के उजाले में इतनी बेखौफ होकर खुले मैदान में घूम सकता था? यह संभव था, लेकिन इसकी संभावना बहुत कम थी।
मेरी घड़ी में शाम के 6:55 बज रहे थे और जैसे-जैसे अंधेरा बढ़ता जा रहा था, मैं भीतरी संकेत की ओर वापस लौटने लगा, पहले से कहीं अधिक सतर्क होकर। चाँद जल्दी निकल आया था, जो वाकई सौभाग्य की बात थी, वरना इस समय तक काफी अंधेरा हो चुका होता।
लगभग उसी जगह पर जहाँ से मैं जंगल से तटबंध पर आया था, एक छोटी सी पुलिया थी, जो एक संकरे लेकिन गहरे नाले को पार कर रही थी। वहाँ कुछ सफेद रंग का मेरी नज़र में आया, जो रेलवे ट्रैक के स्लीपरों के बीच फड़फड़ा रहा था, क्योंकि ट्रैक नाले के ऊपर से गुजर रहा था। मैं रुका और स्लीपरों के बीच से झाँका।
यह रेलवे कर्मचारी की सफेद धोती थी। तटबंध से बीस फीट दूर, एक बड़े पत्थर के नीचे, एक लंबी, काली आकृति पड़ी थी, जिसे मैं पीड़ित का शव समझ गया था। उस धुंधली रोशनी में भी मैं बता सकता था कि शिकार के बाद बीते थोड़े समय में ही शव का कुछ हिस्सा खा लिया गया था। गर्दन कटी हुई थी और सिर लगभग एक गज दूर पड़ा था। चूंकि बाघिन शायद उस समय आसपास ही हो सकती थी, या झाड़ियों की आड़ से मुझे देख रही हो, इसलिए तटबंध से नीचे उतरकर शव की बारीकी से जांच करना अनावश्यक रूप से खतरनाक होगा।
स्थिति का जल्दी से जायजा लेने के बाद मैंने रेलवे लाइन के ठीक बीचोंबीच, पुलिया के आर-पार समकोण पर लेटने का फैसला किया। इससे मैं आगे या पीछे से हमले से सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि ऐसा करने के लिए बाघिन को नाले के तल से सीधे पंद्रह फीट की छलांग लगाकर पटरी पर आना पड़ेगा। इससे उसके पास पटरी के किनारे, मेरे दाईं या बाईं ओर से हमला करने का विकल्प बचेगा। मुझे आपको बताना चाहिए था कि पुलिया की चौड़ाई लगभग बीस फीट थी। ज़्यादा नहीं, लेकिन कम से कम मुझे बाघिन को देखने का समय तो मिल जाएगा।
बेशक, यह संभावना थी कि वह तटबंध पर तिरछे कोण से रेंगती हुई आएगी और मुझ पर परोक्ष रूप से हमला करेगी, या तो सामने से, या इससे भी बदतर, पीछे से; और या तो मेरे बाईं ओर से या दाईं ओर से।
यह एक ऐसा जोखिम था जिसे उठाना ही था।

इंसान का हो या किसी और जीव का, अपने आप हिल नहीं सकता। उसे किसी चीज़ ने ज़रूर हिलाया होगा!
मैंने सिर को ध्यान से देखा, और तेज़ चाँदनी ने मुझे मेरी समस्या का हल दिखा दिया। सफेद रेत में दो काली वस्तुएँ हिलती हुई दिखाई दे रही थीं। वे 'गैंडा भृंग' थे: बड़े कीड़े, डेढ़ इंच से भी ज़्यादा लंबे, जिनकी नाक पर गैंडे के सींग जैसे बड़े-बड़े कांटे होते हैं, इसी समानता के कारण इनका नाम पड़ा है। आम तौर पर ये रात में सक्रिय होते हैं, हालाँकि इन्हें अक्सर जंगल की सड़कों पर, सुबह-सुबह और फिर देर शाम को, अपने आकार से लगभग तीन गुना बड़े गोबर के गोले को किसी अज्ञात जगह की ओर लुढ़काते हुए देखा जा सकता है। इन दोनों नन्हे जीवों ने अपनी संयुक्त शक्ति से एक बार इस सिर को पलटने में सफलता प्राप्त कर ली थी, लेकिन दूसरी बार वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। मैं जो देख रहा था उसमें इतना मग्न था कि बाघिन के बारे में पूरी तरह भूल गया था; उस समय वह आसानी से मुझे चौंका सकती थी।
अब 1:40 बज रहे थे और मेरे सीने के नीचे की रेल पटरी कांपने लगी। तभी मुझे दूर से एक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी जो धीरे-धीरे तेज़ और नज़दीक आती गई। एक तीखी सीटी की आवाज़ गूंजी और देखते ही देखते एक इंजन की तेज़ रोशनी सीधे मुझ पर पड़ी। यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली नाइट मेल ट्रेन थी।
मैं बड़ी मुश्किल से उठा, अपना थैला उठाया, पुलिया के अंत तक गया और फिर तटबंध से कुछ कदम नीचे उतरा। लेकिन मैं ट्रेन चालक की सतर्कता को पूरी तरह से भूल गया था। उसने इंजन की तेज हेडलाइट में मुझे साफ देखा था, हालांकि उसने मेरी राइफल पर ध्यान नहीं दिया था। जैसा कि वह मुझे कुछ ही मिनटों में बताने वाला था, उसने मुझे आत्महत्या करने की कोशिश करने वाला समझा, जो जानबूझकर पटरी पर लेटकर ट्रेन के नीचे कुचल जाना चाहता था, लेकिन आखिरी क्षण में उसका साहस जवाब दे गया। वैसे, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि आत्महत्या करने का यह तरीका भारत में काफी प्रचलित है।
खैर, ब्रेक की तेज़ आवाज़ और भाप की ज़ोरदार फुफकार के साथ, ट्रेन मेरे पास से इंजन के गुज़रने के ठीक बाद आकर रुक गई। इसके बाद मैंने जो सुना, वह था कठोर ज़मीन पर बूटों की ज़ोरदार आवाज़, जैसे कोई मेरी ओर दौड़ रहा हो। वे इंजन के ड्राइवर और उसके दो दमकलकर्मी थे।
वे मुझ पर झपटे और मुझे पकड़ लिया। तभी उन्हें एहसास हुआ कि मैं वो नहीं था जो उन्होंने मुझे समझा था। इसी बीच, डिब्बों की खिड़कियों से कई लोगों ने सिर बाहर निकाले और सैकड़ों आवाज़ें सवाल-जवाब और अटकलें लगाने लगीं। पहरेदार अपनी लालटेन लेकर पीछे से आया। इसलिए मेरे पास उन्हें यह बताने के अलावा कोई चारा नहीं था कि मैं क्या कर रहा था।
‘वह आदमी कहाँ है जिसे बाघ ने खा लिया?’ ड्राइवर ने पूछा, जो अधेड़ उम्र का एंग्लो-इंडियन था। मैंने उसे लाश की ओर इशारा किया। ‘और आप शाम से यहाँ खुले में अकेले पड़े हैं?’ उसने अविश्वास से पूछा।
जब मैंने हाँ में जवाब दिया, तो उसने बड़ी सरलता से कहा, 'तुम बिलकुल पागल हो,' और अपने माथे पर इशारा करते हुए कहा। उसके दोनों दमकलकर्मी और ट्रेन के भारतीय गार्ड ने भी सहमति में सिर हिलाया।
कुछ मिनट बाद, मेल ट्रेन बॉम्बे की अपनी लंबी यात्रा पर आगे बढ़ गई, और मैं एक बार फिर अकेला रह गया। लेकिन इतनी हलचल के बाद बाघिन के आने की मुझे बहुत कम उम्मीद थी।
रात के 2:30 बजे रेल की पटरियाँ फिर से गड़गड़ाने लगीं। इस बार मैं इंजन की हेडलाइट से अपनी मौजूदगी का पता चलने से पहले ही, राइफल छिपाकर, तटबंध पर

चार

गेरहेट्टी का क्रॉस्ड-टस्कर यह एक ऐसे हाथी की कहानी है जिसने 'बदमाश' का नाम कमाया और मद्रास सरकार द्वारा कलेक्टर और सलेम के जिला वन अधिकारी के माध्यम से अधिसूचना जारी करके उसे प्रतिबंधित कर दिया गया।
मैं जिन घटनाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, वे काफी समय पहले घटी थीं। हमेशा की तरह, इस हाथी के मनुष्यों को परेशान करने के पीछे का कारण किसी को नहीं पता था। गेरहेट्टी में तैनात वन रक्षक ने बताया कि लगभग एक महीने पहले, जब इस हाथी ने उत्पात मचाना शुरू किया था, उससे पहले एक रात उसने जंगल में दो नर हाथियों को लड़ते हुए सुना था। उसके अनुसार, यह लड़ाई तीन घंटे से अधिक समय तक रुक-रुक कर चलती रही और वन बंगले से लगभग आधा मील दूर स्थित एक पानी के गड्ढे के पास हुई थी।
अगले दिन उसने देखा कि जंगल रौंदा हुआ था और चारों ओर खून के बड़े-बड़े छींटे पड़े थे, जो दिए गए दंड का प्रमाण थे। उसने जो बताया और वहाँ मचे हंगामे को देखकर लगता है कि यह एक भयंकर संघर्ष रहा होगा। संभवतः वह दुष्ट हाथी, जैसा कि बाद में हमें पता चला, उस लड़ाई में सबसे बुरी तरह घायल हुआ था और उसी क्षण से उसने अपना क्रोध सभी पर निकालना शुरू कर दिया था।
एक और संभावित कारण यह हो सकता है कि वह दुष्ट हाथी, 'मस्त' नामक एक आवधिक बीमारी से ग्रस्त एक साधारण नर हाथी था, जो लगभग तीन महीने तक रहती है और इस दौरान वे असाधारण रूप से खतरनाक हो जाते हैं।
एक तीसरी संभावना यह थी कि इस हाथी को सलेम जिले के जंगलों में पाए जाने वाले कई शिकारियों में से किसी एक ने घायल कर दिया हो। ये शिकारी गर्म और शुष्क गर्मी के महीनों में पानी के स्रोतों और नमक के टीलों पर बैठकर हिरणों का शिकार करते हैं। आम तौर पर, जब कोई शिकारी किसी हानिरहित हिरण से अधिक खतरनाक जानवर को देखता है, तो वह या तो चुप रहता है या अगर उसे लगता है कि शिकार करने का अच्छा मौका है तो चुपके से निकल जाता है। फिर भी, शिकारियों के बीच भी कुछ ऐसे होते हैं जो अंधाधुंध गोली चलाते हैं। वे अपने आस-पास दिखने वाले किसी भी जानवर पर अपनी बंदूकें चला देते हैं, और हो सकता है कि इन्हीं में से किसी एक ने इस हाथी को घायल कर दिया हो और इसी से उसके इस घुमंतू जीवन की शुरुआत हुई हो।
यह भी संभव है कि रात में अपनी फसलों की रखवाली कर रहे किसी साधारण किसान ने अपनी बंदूक से उस पर गोली चला दी हो। हाथी जंगल के पास उगने वाली फसलों को नष्ट करने के शौकीन होते हैं।
जो भी बात उसे शुरू में परेशान कर रही थी, गेरहेट्टी के उस बदमाश ने अपना करियर काफी अचानक शुरू किया, और थोड़े समय के लिए उसने उस घने जंगल में अपना दबदबा कायम रखा जहां वह रहता था, और वह एक आतंक बन गया, जिसने लगभग चार सौ वर्ग मील के क्षेत्र में बैलगाड़ी और पैदल यात्रियों सहित सभी यातायात को ठप कर दिया।
गेरहेट्टी एक छोटे से गाँव का नाम है जिसमें लगभग पाँच-छह झोपड़ियाँ हैं। यह गाँव सलेम नॉर्थ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में एंचेटी से पेन्नाग्राम जाने वाले रास्ते से लगभग दो मील दूर स्थित है। यहाँ का इलाका बहुत पहाड़ी है और तलवादी नाले नामक एक पथरीली धारा के दोनों किनारों से लगभग तीन मील की दूरी तक घना बाँस का जंगल फैला हुआ है। यह धारा कावेरी नदी में उस स्थान से

एकमात्र संकेत उसकी छोटी-छोटी खून से लाल आँखें थीं, जो मेरी ओर आते देख चमक रही थीं और हिल रही थीं। पंद्रह गज की दूरी से मैंने अंतिम प्रहार करने के लिए अपनी राइफल उठाई। मानो मृत्यु को सलाम करते हुए, वह ताकतवर जानवर सिर से पैर तक काँप उठा और अपने विशाल शरीर को पूरे दस फीट तक सीधा खड़ा कर लिया। सूंड ऊपर की ओर मुड़ गई, बड़े कान बाहर की ओर फड़फड़ाए, और वह अपने अंतिम आक्रमण में दो कदम आगे बढ़ा, तभी 450/400 कैलिबर की भारी गोली उसकी कनपटी पर लगी और वह कुल्हाड़ी से मारे जाने की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा। हालांकि गेरहेटी का 'क्रॉस-टस्कर' एक हत्यारा था, लेकिन वह एक बहादुर योद्धा भी था, और मैंने उसे सम्मान दिया जब वह मेरे अभी भी धुआं उगलते थूथन के सामने पड़ा था - जीवन में शक्तिशाली और अपनी मृत्यु में उससे भी अधिक शक्तिशाली!

पाँच

संगम पैंथर
मेरे बैंगलोर स्थित घर तक यह खबर पहुंची कि एक तेंदुआ, जिसे भारत में आमतौर पर 'पैंथर' के नाम से जाना जाता है, शहर से लगभग सत्तर मील दक्षिण में स्थित संगम नामक स्थान के आसपास लोगों को मार रहा था।
दक्षिण भारत में आदमखोर तेंदुओं का मिलना दुर्लभ है। एक तो, यहाँ के जंगल उत्तर भारत की तुलना में इतने विस्तृत या इतने निरंतर पर्वतीय नहीं हैं, विशेषकर विशाल हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में। इसका अपवाद पश्चिमी घाट है, जो लगभग चार सौ मील से अधिक दूरी तक पूरी तरह से जंगलों से ढका हुआ है, जिसकी औसत चौड़ाई दस से पंद्रह मील है। लेकिन अन्य वन क्षेत्र काफी छोटे हैं और लगभग चारों ओर से खेती से घिरे हुए हैं। इस कारण मांसाहारी जानवर, और विशेष रूप से तेंदु, अपना ध्यान मवेशियों और बकरियों के झुंडों तक ही सीमित रखते हैं, जिनमें यह देश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, और कुछ हद तक गाँव के आवारा कुत्तों पर भी, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पाईडॉग' कहा जाता है, जो आम बंदरों की तरह ही इस क्षेत्र के लिए अभिशाप हैं। हाइड्रोफोबिया के टीके के आने से पहले, पागल कुत्तों के काटने से होने वाले संक्रमण से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी, क्योंकि ये आवारा कुत्ते, विशेष रूप से गर्म मौसम में, लगातार रेबीज से संक्रमित होते रहते हैं। बंदर हमेशा से ही एक बड़ा खतरा रहे हैं, जो फसलों और फलों के पेड़ों को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। बंदर का भारतीयों के लिए गहरा धार्मिक महत्व है, और इसे नुकसान पहुंचाने के किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध किया जाता है। इसलिए, पैंथर—कम से कम जहां तक 'पाइडॉग' और बंदरों का संबंध है—भूमि की बहुत बड़ी सेवा करते हैं।
पश्चिमी घाट, जिसके बारे में मैंने अभी बात की है, में भारी वर्षा होती है, जो प्रति वर्ष सौ इंच से भी अधिक होती है। यह क्षेत्र घने बांस, लंबी घास और घनी सदाबहार वनस्पतियों से ढका हुआ है—जो मच्छरों, कीड़ों, जोंकों, मक्खियों और अन्य कीट-पतंगों के लिए प्रजनन स्थल हैं।
पैंथर को ज़्यादा पानी पसंद नहीं होता और वे हर तरह के कीटों से घृणा करते हैं! इसलिए, एकमात्र ऐसे क्षेत्र में जहाँ वे बेरोकटोक प्रजनन कर सकते हैं, वे मुश्किल से ही पाए जाते हैं! अतः, प्राकृतिक व्यवस्था के कारण, दक्षिण भारत के अन्य सभी जंगलों में पाए जाने वाले पैंथरों को आमतौर पर भरपूर भोजन मिलता है और वे किसी तरह नरभक्षी बनने की बुरी आदत से बच जाते हैं। इसका एक उल्लेखनीय अपवाद गुम्मलपुर का पैंथर था, जिसकी कहानी मैंने कहीं और बताई है*; उस मामले में कुछ विशेष परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण उसने नरभक्षी बनना शुरू कर दिया था।
बैंगलोर में अक्सर ऐसी खबरें आती थीं कि लोग तेंदुओं और बाघों के हमले का शिकार हो रहे हैं, जिनमें से ज़्यादातर हमले तेंदुओं द्वारा किए जाते थे। लेकिन इन अफवाहों पर किसी ने खास ध्यान नहीं दिया क्योंकि मौके पर की गई जांच से हमेशा एक ही बात सामने आती थी। कोई ग्रामीण अपनी बंदूक से या कोई अनुभवहीन शिकारी तेंदुओं पर गोलियां चलाता, आमतौर पर छर्रे, और उसे बस घायल कर पाता। फिर, जंगल के नियमों से अनभिज्ञ होकर, वह तेंदुओं का पीछा करने की कोशिश करता, लैंटाना की झाड़ियों या चट्टानों के बीच से, और इस चक्कर में बुरी तरह घायल हो जाता—कभी-कभी तो गंभीर रूप से। बीते वर्षों

में, ऐसे हमलों के 75 प्रतिशत से अधिक मामलों में सेप्टीसीमिया से मौत हो जाती थी। सल्फा दवाओं के आने से, मरने वालों की संख्या घटकर 10 प्रतिशत से भी कम हो गई।
इसलिए जब ऐसी खबरें आईं तो किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। भला क्यों देते? उनके पास करने के लिए और भी काम थे। इसके अलावा, भारत में अफवाहें हमेशा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश की जाती हैं! एक मामूली खरोंच को भी भयानक हमले में बदल दिया जाता है, और मामूली हमले को हत्या बता दिया जाता है। जब वास्तव में कोई हत्या होती है, तो प्रेस में उसे कई हत्याओं के रूप में बताया जाता है।
इसलिए, जब मैंने सुना कि संगम में एक पैंथर ने एक महिला को मार डाला और बाद में एक बच्चे को मारकर खा लिया, तो मुझे विश्वास नहीं हुआ। फिर पैंथर ने तीसरी और चौथी बार भी हत्या की। प्रेस को यह खबर मिली और यह अखबारों के पहले पन्नों पर छाई रही।
बैंगलोर, मैसूर और मद्रास से कई शिकारी उस जानवर का शिकार करने निकले, लेकिन एक महीने तक पैंथर ने किसी को नहीं मारा। एक शिकारी ने पैंथर को मार गिराने में सफलता प्राप्त की; और यह तथ्य, साथ ही मनुष्यों की हत्याओं का रुक जाना, इस बात का संकेत देता प्रतीत हुआ कि जिस पैंथर को मारा गया था वह आदमखोर ही था। शिकारी अपने-अपने शहरों में लौट गए।
फिर पैंथर ने एक बार फिर शिकार किया, लेकिन उसे अपने शिकार को खाने से रोक दिया गया, जो एक आदमी था और एक झोपड़ी जैसे कमरे में चार आवारा कुत्तों के झुंड के साथ सो रहा था, जिनके साथ वह खरगोश और कभी-कभी हिरण का शिकार किया करता था।
शेड के प्रवेश द्वार पर कंटीली बाड़ लगी हुई थी। छत जस्ता की चादरों के ढीले टुकड़ों से बनी थी, और दीवार जमीन में गाड़े गए लकड़ी के खंभों से बनी थी, जिनके बीच के अंतराल कंटीले...
पैंथर शेड में घुस गया। कुत्ते एक जगह जमा हो गए लेकिन कुछ नहीं किया, और हमलावर उनके पास से गुज़रते हुए उस आदमी का गला पकड़ लिया। एक तीखी चीख के साथ ही उसकी मौत हो गई।
पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग शेड में कुत्तों के भौंकने और गुर्राने की आवाज़ से परेशान थे। वे सोच रहे थे कि आखिर क्या हो रहा है, लेकिन कोई भी बाहर जाकर देखने को तैयार नहीं था। तभी पैंथर ने उसी छेद से मरे हुए आदमी को शेड से बाहर खींचने की कोशिश की, जिससे वह अंदर आया था। छेद काफी बड़ा नहीं था। इसलिए पैंथर खुद उसी छेद से अंदर घुस गया और आदमी को अपने पीछे खींचने की कोशिश की। लेकिन शरीर कांटों में फंस गया और अटक गया। फिर पैंथर ने ज़ोर से धक्का दिया, जिससे बाड़ का संतुलन बिगड़ गया और वह जानवर के ऊपर ज़ोर से गिर पड़ी। इससे वह बहुत डर गया होगा, क्योंकि वह लाश को कांटों में फंसा छोड़कर भाग गया।
पैंथर के लगातार शोरगुल से पास की झोपड़ी में रहने वाले लोग घबरा गए, जो इतनी देर से सांस रोककर सुन रहे थे। वे चिल्लाने लगे और दूसरे ग्रामीणों को जगा दिया। काफी देर बाद, कुछ बहादुर आदमी लालटेन लिए, बंदूकों, लाठियों और डंडों से लैस होकर बाहर आए, तो उन्हें मरा हुआ आदमी तो मिला, लेकिन पैंथर नहीं।
अब फिर से दहशत फैल गई, और मुझे यह खबर गांव के पटेल (मुखिया) ने दी, जो खास तौर पर इसी उद्देश्य से बैंगलोर आए थे। उस समय मुझे दो दिन की आकस्मिक छुट्टी मिल सकती थी, और रविवार को तीसरी छुट्टी मिल जाती थी। इसलिए मैं

देर बाद, मैं उठा और बंगले की ओर वापस चल दिया। मुझे अभी तक किसी पैंथर के पदचिह्न नहीं मिले थे।
रात आसमान साफ था। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन पिछली रात के बादल भी नहीं थे और जंगल में तारों की रोशनी इतनी थी कि कुछ गज तक देखा जा सके।
बंगले के चौकीदार के पास एक 'पाइडॉग' (भारत में देसी कुत्तों को इसी नाम से जाना जाता है) था, और अपनी आदत के विपरीत और समय की कमी के कारण, मैंने उससे आधी रात तक उसे उधार देने का अनुरोध किया। पहले तो उसने आनाकानी की, लेकिन तीन रुपये के लेन-देन के बाद वह मान गया।
उस दिन सड़क पर चलते हुए, मेरी नज़र लगभग एक मील दूर, उसके किनारे पर पड़ी एक चट्टान पर पड़ी। मैंने कुत्ते को लिया, उसे चट्टान के नीचे बाँधा और सड़क पर आगे बढ़ गया। कुत्ते की नज़र से ओझल होते ही, मैं दाईं ओर मुड़ा और जंगल में घुस गया, फिर चट्टान के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। चुपचाप मैं ऊपर चढ़ गया और उसके शिखर पर लेट गया। चट्टान अभी भी धूप से गर्म थी, जो दिन भर उस पर पड़ती रही थी।
यह सोचकर कि उसे छोड़ दिया गया है, कुत्ता बारी-बारी से भौंकने, रोने और चिल्लाने लगा। कुत्ते बहुत बुद्धिमान होते हैं, उन्हें चारा बनाकर बांधना अनुचित है। गायों और बकरियों के विपरीत, वे खतरे को तुरंत भांप लेते हैं और, भले ही उन पर हमला न हो, घंटों मानसिक पीड़ा झेलते हैं। मैं एक ऐसे कुत्ते को जानता हूँ जिसे एक पैंथर के लिए चारा बनाकर बांधा गया था— हालाँकि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ—वह इतना घबरा गया कि अगले दिन बीमार पड़ गया और एक हफ्ते के भीतर मर गया।
मैं चट्टान की चोटी से देख रहा था। लगभग एक घंटा बीत गया, और फिर अचानक एक धुंधली, धूसर आकृति सड़क पर तेजी से दौड़ती हुई आई। वह कुत्ते से लगभग दस फीट की दूरी तक तेजी से दौड़ी, फिर रुक गई। क्या यह पैंथर हो सकता है? तारों की रोशनी इतनी ही थी कि अंधेरा पूरी तरह से न छाए, उससे ज़्यादा नहीं। मुझे धुंधली सी एक आकृति कुत्ते को घूरती हुई दिखाई दी। कुत्ता गुर्राया और घुसपैठिए की ओर मुड़ गया। मैंने सोचा, ज़रूर कोई पैंथर होगा, और मैंने अपनी राइफल का निशाना उसकी ओर साध लिया, ताकि बैरल पर लगी टॉर्च का स्विच दबा सकूँ।
घुसपैठिए ने ‘हा! हा! हा! हा! हा!’ कहा, और उसके बाद अपमानजनक लेकिन तेज़ आवाज़ में ‘ची! शी-ए! शी-ए!’ की आवाज़ आई।
यह एक लकड़बग्घा था, दक्षिण भारत का आम धारीदार लकड़बग्घा। कुत्ता और भी भयंकर रूप से गुर्राया; फिर उन्माद में भौंकने लगा।
अब एक मनोरंजक नाटक शुरू हुआ, जैसा कि रात में जंगल में पहरा देने वालों को कभी-कभार देखने का सौभाग्य मिलता है। लकड़बग्घा सड़क से हटकर झाड़ियों में घुस गया, जहाँ वह 'गुड्डा! गुद्दार! गर्रार! गुर्र-र्र-आ!' कहने लगा और अंत में अपनी आदत के अनुसार 'ची-आर! शी-आर!' कहने लगा।
कुत्ते ने शोर की ओर मुँह किया और ज़ोर से भौंका। लकड़बग्घा सड़क पर फिर से प्रकट हुआ, कुत्ते से थोड़ा आगे, लेकिन उसे देखता हुआ, और कर्कश आवाज़ में बोला, 'हा! हा! हा! गुड्डर! गर्रार! शी-ए!'
अपने अफ्रीकी रिश्तेदारों, चित्तीदार और भूरे लकड़बग्घे के विपरीत, जिनमें से चित्तीदार लकड़बग्घा वही जाना-पहचाना 'हंसने वाला लकड़बग्घा' है जिसके बारे में हम सबने सुना है, भारतीय लकड़बग्घा आमतौर पर शांत स्वभाव का जानवर होता है, जो अकेले या ज़्यादा से ज़्यादा जोड़े में शिकार करता है। चित्तीदार लकड़बग्घे झुंड में चलते हैं। आम तौर पर, सभी

में भाग गया, जबकि कुत्ता भौंकना बंद करके धीरे-धीरे रोने लगा। मुझे लगा कि मैंने एक अवांछित मेहमान को वहां से भगा दिया है।
लगभग पंद्रह मिनट बीत चुके थे कि मुझे फिर से दबी-दबी टप-टप की आवाज़ सुनाई दी, जिसके तुरंत बाद लकड़बग्घे की अजीब आवाज़ें आईं। कुत्ता भौंका और गुर्राया। मैंने लकड़बग्घे पर एक और पत्थर फेंका। वह रुका; लेकिन दस मिनट बाद फिर से शुरू हो गया। एक बार फिर पत्थर; एक बार फिर सन्नाटा, फिर एक नई शुरुआत। लगभग पाँचवें पत्थर के बाद ही लकड़बग्घे को लगा कि वह जगह किसी तरह अस्वस्थ हो गई है, और आखिरी बार 'आह! आह! आह! ची-ई! शी-ए!' कहते हुए वह वहाँ से चला गया। दस बज चुके थे।
मेरी घड़ी में आधी रात होने में पाँच मिनट बाकी थे, तभी मुझे इंसानों की आवाज़ें सुनाई दीं। थोड़ी देर बाद, मैंने दो लालटेन की टिमटिमाती रोशनी देखी, जो दूर से कई आदमियों के कदमों को रोशन कर रही थी। कुत्ते ने उन्हें देखा और उसका कराहना बंद हो गया।
जब दल कुत्ते के पास पहुंचा, तो मैंने ग्यारह आदमियों को गिना, जिनमें से दो लालटेन लिए हुए थे, और एक को छोड़कर बाकी सभी किसी न किसी प्रकार के डंडे और लाठी लिए हुए थे।
उनमें से एक अपवाद था जिसके पास बंदूक थी। जाहिर है वे मेरी ही तलाश में आए थे। मैंने उनकी आवाज सुनी और चट्टान से नीचे उतर आया।
फिर उन लोगों ने मुझे बताया कि लगभग एक घंटे पहले ही, पैंथर उसी गाँव की एक झोपड़ी में घुस गया था जहाँ कुत्ते के रखवाले पर हमला हुआ था। उसने छप्पर की दीवार में छेद करके अंदर प्रवेश किया और सो रही पाँच महिलाओं में से एक, लगभग पच्चीस साल की एक महिला को पकड़ लिया। जब उसे घसीटकर ले जाया जा रहा था, तो वह ज़ोर से चीखी, जिससे कमरे में मौजूद अन्य चार लोग, उसके पिता, दो भाई और माँ, जाग गए।
इसी बीच, पैंथर उस छप्पर में बने छेद से लड़की को बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था जिससे वह अंदर आया था। लड़की ने ज़ोरदार संघर्ष किया। पैंथर ने उसे छोड़ दिया और बेरहमी से काट लिया। भाइयों में से एक ने झोपड़ी के अंदर के अंधेरे को दूर करने के लिए माचिस जलाई। उसके पिता ने सराहनीय साहस और सूझबूझ दिखाते हुए, अपने हाथ में आए एकमात्र हथियार को पैंथर पर फेंक दिया। वह हथियार पीतल का एक भारी पानी का घड़ा था, जो पैंथर के बगल में ज़ोर से लगा। आदमखोर जानवर, चाहे बाघ हों या पैंथर, स्वभाव से हमेशा थोड़े डरपोक होते हैं और यह पैंथर भी इसका अपवाद नहीं था। अपने शिकार को छोड़कर, वह छप्पर में बने छेद से झोपड़ी से बाहर निकल गया।
घायल महिला की चीख-पुकार और चारों ओर मची अफरा-तफरी ने पूरे गांव को जगा दिया था। पुरुष लालटेन लेकर, जितना हो सके उतने हथियारों से लैस होकर बाहर आए। ग्यारह लोगों का दल मुझे ढूंढने के लिए विश्रामगृह आया था, और जिस चौकीदार से मैंने कुत्ता उधार लिया था, उसने उन्हें उस जगह का रास्ता बताया जहां मैं बैठा था।
मैंने एक आदमी को रस्सी खोलने और कुत्ते को साथ लाने के लिए कहा और जल्दी से बंगले की ओर वापस भागा। मैंने स्टुडेबेकर की पिछली सीट से अपनी प्राथमिक चिकित्सा किट निकाली। फिर हम गाँव की ओर तेज़ी से बढ़े, जहाँ एक भयानक दृश्य मेरा इंतज़ार कर रहा था। बेचारी लड़की के दाहिने कंधे पर चीं- चीं का घाव था, और फिर पेट पर भी, जहाँ पैंथर ने उसे दूसरी बार तब पकड़ा था जब वह भागने की कोशिश कर रही थी। उसका एक स्तन और छाती का पूरा हिस्सा चीर-फाड़ गया था, जहाँ उसके गंदे पंजों ने उसके मांस में गहरे धंसकर उसे बुरी

दोपहर 3 बजे मेरी नींद खुली और सोते समय मुझे एक संभावित कार्ययोजना सूझी। वह यह थी:
संगम नाम का छोटा सा गाँव, जिसमें लगभग एक दर्जन झोपड़ियाँ थीं, एक केंद्रीय गली के दोनों ओर सामान्य ढंग से बसा हुआ था। मुझे याद आया कि इस गली के दक्षिणी किनारे पर, नदी के तट से कुछ ही दूरी पर, ग्रामीणों के मवेशियों के छोटे-छोटे झुंड एक साझा बाड़े में रखे जाते थे, जो बांस की बाड़ से घिरा हुआ था और बीच-बीच में कटी हुई लैंटाना की झाड़ियाँ लगी हुई थीं। गाँव में बचे हुए इकलौते कुत्ते, जो मारे गए व्यक्ति के थे, उस झोपड़ी जैसे कमरे में बंद थे जहाँ उसकी हत्या हुई थी, और वह कमरा पश्चिमी तरफ बड़े मवेशी बाड़े से सटा हुआ था। मेरे मन में यह विचार आया कि अगर मैं रात में मवेशियों के बीच छिप जाऊँ, तो न केवल मैं अचानक हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहूँगा, क्योंकि अगर पैंथर पास आएगा तो मवेशी बेचैन होकर पर्याप्त चेतावनी देंगे, बल्कि यह बेचैनी और कुत्तों का भी खतरे की घंटी बजाना, मुझे पैंथर की उपस्थिति का पता लगाने में मदद करेगा, अगर वह गाँव में प्रवेश करता है। इस बीच, मैं अपने पांच जीवित चारे बांधकर रखूंगा, इस उम्मीद में कि शायद उनमें से कोई एक मछली पकड़ ले।
इस योजना को ध्यान में रखते हुए, मैंने रात के लिए गर्म कपड़े पहने और ओस से बचने के लिए खाकी ऊनी 'बालाक्लावा' टोपी पहनी। मेरे सामान्य रात्रिकालीन सामान में इस बार चाय का एक बड़ा थर्मस, कुछ बिस्कुट और मेरा पाइप शामिल था, क्योंकि मुझे पता था कि इस स्थिति में धूम्रपान करने से कोई नुकसान नहीं होगा।
पैंथर की मौजूदगी के कारण, गाँव वाले सुबह छह बजे से काफी पहले ही अपनी झोपड़ियों के अंदर चले गए थे, दरवाजों को ताज़े कटे कांटों से बंद कर दिया था। मैंने मवेशी बाड़े के बीचोंबीच अपनी जगह ले ली। मेरे चारों ओर लगभग पचास गज का क्षेत्र था, जिसमें लगभग सौ साधारण दिखने वाले मवेशी इधर-उधर बिखरे पड़े थे।
पहले तो जानवरों को मेरी मौजूदगी से चिढ़ हुई और वे मुझसे दूर कोनों में जमा हो गए, जिससे मैं बाड़े के बीचोंबीच अकेला रह गया। मैंने उनसे दोस्ती करने की कोशिश शुरू की। एक जानवर ने मेरी चाय की थर्मस को लात मारकर गिरा दिया और लगभग तोड़ ही दी! इसके अलावा, कुछ बैल काफी आक्रामक थे और अगर मैं उनके बहुत करीब जाता तो वे अपने सींगों से मुझ पर वार करते। एक घंटे साथ बिताने के बाद, स्थिति थोड़ी शांत हुई और मैं धीरे-धीरे झुंड के बीचोंबीच पहुँच गया, जहाँ लगभग आधे जानवर ज़मीन पर आराम कर रहे थे। मैं भी नीचे बैठ गया।
जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा बना रहा, सिवाय कभी-कभार किसी जानवर की हल्की सी आवाज़ या किसी दूसरे जानवर के हिलने-डुलने की आहट के। एक गाय मुझसे घुलमिल गई और दोस्ती जताने के लिए अपना थूथन मेरी छाती से रगड़ने लगी। आखिरकार वह संतुष्टि से मेरे बगल में ज़मीन पर लेट गई।
फिर मवेशियों के कीड़े मुझे कई जगहों पर बेरहमी से काटने लगे। मैंने खुद को ज़ोर से खुजलाया, हालाँकि मुझे पता था कि ऐसा करने से जलन और बढ़ जाएगी। ठंड बढ़ती गई, और जल्द ही मुझे उस गाय के गर्म शरीर से सटकर आराम करने में खुशी हुई, जिसने मेरे साथ यह अजीब दोस्ती शुरू की थी। बीच-बीच में झुंड की कोई गाय संतुष्टि से 'मूं' करती, या फुफकारती, या लात मारती, या ज़मीन पर गिर जाती, या फिर उठने की कोशिश करती।

⬛⬛

The Ramapuram Tiger

⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛, ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ 3,600 ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛, ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ - ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛⬛⬛-⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛, ⬛⬛⬛⬛⬛⬛ ⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛⬛

'चॉपर' कहा जाता है, से बाधा को काटता है और उसे एक तरफ खींच लेता है, फिर आगे बढ़ता है जब तक कि उसे कोई दूसरी ऐसी ही बाधा न मिल जाए। इस उपयोगी 'चॉपर' के बिना, यह रास्ता पार करना असंभव होता।
बाघ आमतौर पर घनी वनस्पतियों को नापसंद करते हैं और कम झाड़ियों वाले जंगलों में रहना पसंद करते हैं, जबकि हाथी और बाइसन ऐसे जंगलों को पसंद करते हैं। बाघ की इस पसंद के कई कारण हैं, जिनमें से एक यह है कि घनी झाड़ियाँ बाघ को अपने शिकार का सावधानीपूर्वक पीछा करने से रोकती हैं और उसके अंतिम समय के प्रभावी हमले में बाधा डालती हैं। दूसरा कारण यह है कि बाघ का वैध शिकार - सभी प्रकार के हिरण, जंगली सूअर और, ज़ाहिर है, गाँव के मवेशी - घने जंगलों में प्रवेश नहीं करते, जहाँ मुख्य रूप से हाथी और बाइसन रहते हैं, जिनसे बाघ आमतौर पर दूर रहता है। तीसरा कारण यह है कि घनी झाड़ियों में जोंक, कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े और मक्खी (जिसे भारत में घोड़ा मक्खी या पशु मक्खी कहा जाता है) जैसे कीट पनपते हैं; बाघ इन कीटों से बेहद नफरत करते हैं।
रामपुरम का आदमखोर कावेरी नदी के किनारे, छह हजार फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित पोन्नाचाई मलाई नामक पर्वत क्षेत्र से आया बताया जाता है। इस पर्वत की ढलानों पर शोलागा और अन्य भारतीय बागान मालिकों के स्वामित्व वाले कुछ छोटे कॉफी बागान मौजूद हैं। कहा जाता है कि रामपुरम के आदमखोर ने एक साधारण मवेशी चोर के रूप में अपना धंधा शुरू किया था, जो बागान मालिकों और मजदूरों के पालतू पशुओं को चुराने के लिए इन बागानों पर छापा मारता था। बताया जाता है कि उसने कई पशुओं को मारकर खा लिया था, जब तक कि एक बागान मालिक, जो अपने साथियों से कहीं अधिक साहसी था, कोयंबटूर शहर गया और वहाँ से एक बेहद मजबूत दिखने वाला जाल खरीद लिया।
यह जाल लोहे का बना था, जिसमें दांतों की दो अर्धवृत्ताकार पंक्तियाँ थीं। जब इन्हें खोलकर अलग रखा जाता था, तो इनका फैलाव लगभग ढाई फीट तक होता था। दांत लगभग दो इंच लंबे थे। जबड़ों को एक बेहद संवेदनशील ट्रिगर द्वारा अलग रखा जाता था, जिसे छोड़ने पर एक असाधारण रूप से शक्तिशाली स्प्रिंग बिजली की गति से जबड़ों को शोर मचाते हुए एक साथ ले आती थी, जिससे नुकीले दांत आपस में फंस जाते थे।
कुछ ही समय बाद, बाघ ने एक दुधारू गाय को मार डाला और उसे खाई में घसीटकर सूखे पत्तों के ढेर के नीचे छिपा दिया, बिना खाए। शिकार का पीछा किया गया और उसे खोज निकाला गया। जाल को गाय के पिछले हिस्से के पास सावधानीपूर्वक लगाया गया, जहाँ बाघ आमतौर पर भोजन के लिए लौटते समय अपना काम शुरू करता था। जिन सूखे पत्तों से शिकार छिपाया गया था, उन्हीं पत्तों का इस्तेमाल जाल को छिपाने के लिए किया गया। बाघ वापस आया, और दुर्भाग्य से और दूसरों के भविष्य के दुर्भाग्य के लिए—उसका सिर जाल में फंस गया, जिसने उसकी गर्दन के दोनों ओर, कानों के ठीक पीछे, उसे मजबूती से जकड़ लिया।
जाल को एक खूंटी से जमीन में गाड़ दिया गया था। बाघ ने जाल पर हमला किया और खूंटी को उखाड़ने में कामयाब हो गया, जबकि जाल उसके गले में मजबूती से जकड़ा हुआ था। फिर वह भारी जाल को घसीटते हुए जंगल में भाग गया, और लगभग दो मील दूर एक जगह पर जाल दो बड़ी चट्टानों के बीच बुरी तरह फंस गया। बाघ ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जाल पहले से भी ज्यादा मजबूती से फंस गया।
दर्द से कराहते हुए बाघ दहाड़ा और बुरी तरह छटपटाया। उसकी दहाड़ें आधी रात तक बागान मालिक और उसके डरे हुए मजदूरों को सुनाई देती रहीं, जो दो मील दूर

अधिक थी। क्योंकि, प्राप्त जानकारी के अनुसार, पिछले तीन-चार दिनों में प्रत्येक बस्ती में एक बाघ आया था!
शाम लगभग 5 बजे मैं बैलूर गाँव पहुँचा, जहाँ लगभग बीस झोपड़ियाँ थीं। यहाँ मेरी मुलाकात सड़क निर्माण दल के उन सदस्यों से हुई जिन्होंने इक्कीसवें मील के पत्थर के पास महिला की हत्या देखी थी। उन्होंने मुझे वही बताया जो मैंने पहले ही लिख लिया है और विशेष रूप से बाघ के विकृत शरीर पर ज़ोर दिया, जिसे उन्होंने स्पष्ट रूप से देखा था जब वे भय से वहीं खड़े रह गए थे, जबकि बाघ अपनी चीखती हुई शिकार, सड़क निर्माण मजदूर महिला को लेकर झाड़ियों में भाग गया था।
सबसे नज़दीकी वन विभाग का लॉज डिंबम की दिशा में मोटर रोड पर लगभग साढ़े तीन मील आगे था। रिजर्व सड़क के दोनों ओर फैला हुआ था। शाम के 5:30 बज रहे थे और मुझे पता था कि एक घंटे में रात हो जाएगी, इसलिए मैंने आखिरी साढ़े तीन मील की दूरी तेज़ी से तय की और अंधेरा होने से कुछ ही देर पहले छोटे से वन बंगले पर पहुँच गया।
बंगले से लगभग तीन मील पश्चिम में स्थित बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों की विशाल श्रृंखला के पीछे सूरज डूब चुका था, और शाम के समय पेड़ों पर बैठे मोर और जंगली मुर्गों की चहचहाहट ने मेरा स्वागत किया जब मैं बरामदे में घसीटकर लाई गई एक पुरानी टूटी कुर्सी पर बैठ गया। पश्चिम की ओर से नीचे उतरते हुए एक सांभर हिरण की दूर से आती हुई आवाज मेरे कानों को मधुर संगीत की तरह लगी, क्योंकि वह बंगले को तलहटी से अलग करने वाली घनी घाटी के ऊपर से गुजर रहा था। इस घाटी के असंख्य वृक्षों की चोटियाँ ढलते हुए धुंधलके में एक काले कालीन की तरह लग रही थीं।
आधा घंटा भी मुश्किल से बीता था कि चारों ओर घना अंधेरा छा गया, जिसकी हल्की-हल्की टिमटिमाहट लाखों जुगनुओं की झिलमिलाहट से गूंज रही थी। वे हर जगह तैर रहे थे, मानो अंधेरे में नन्हे-मुन्ने परी हों, और अपनी चमकीली लालटेनें आस-पास के हर झाड़ी या पेड़ की चोटी तक पहुंचा रहे हों। कभी-कभार उनकी चमक एक साथ मिलती थी, और जिस पेड़ या झाड़ी के चारों ओर वे झुंड बनाते थे, वह हजारों छोटे जीवों द्वारा बनाई गई एक विशाल और एकसमान प्रकाश की चमक से कांप उठता था। जंगल की रात का अंधेरा एक क्षणिक, प्रकाशमान और अलौकिक चमक के सामने छंट जाता था—लेकिन केवल एक पल के लिए—जब तक कि फिर से वह दुर्लभ संयोग नहीं आ जाता।
मैंने जल्दी ही रात को लॉज के छोटे से केंद्रीय कमरे के फर्श पर सोकर आराम किया; लेकिन लगभग 2 बजे, एक बाघ की कराहने की आवाज ने मुझे जगा दिया। घाटी से गुजरते हुए मैंने उसकी आवाज रुक-रुक कर सुनी, जब तक कि वह दूर जाकर धीमी नहीं हो गई।
सुबह तड़के मैं बैलूर गाँव पहुँच गया, जहाँ मैंने दो स्थानीय शिकारियों की मदद ली और चारे के लिए तीन जवान बैल खरीदे। इनमें से एक को हमने बंगले के पश्चिम में घाटी से बहने वाली धारा के किनारे बाँध दिया, जहाँ मैंने रात में बाघ की आवाज़ सुनी थी। दूसरे को सड़क से मात्र 100 गज की दूरी पर, गाँव और वन बंगले के बीचोंबीच एक छोटे से जंगल में बाँध दिया। तीसरे को बाँधने के लिए हम वापस इक्कीसवें मील के पत्थर तक गए, जहाँ सड़क बनाने वाले मजदूर की हत्या हुई थी। इस जगह के पास ही सड़क एक वन धारा से होकर गुजरती थी, जिसे ओड्डम बेट्टा हल्ला के नाम से जाना जाता था; इसके किनारे बाँस से ढके हुए थे, सिवाय वन विभाग द्वारा बनाए गए एक छोटे से खुले स्थान के, जिसमें विभिन्न वन पौधों के पौधे प्रायोगिक रूप से उगाए जा रहे थे। मेरे सहायकों

दोपहर के लगभग 3 बज चुके थे जब हम फॉरेस्ट लॉज वापस लौटे और देर से ठंडा दोपहर का भोजन किया। शोलागा ने आग जलाई, जिस पर मैंने कुछ पानी उबालकर हम दोनों के लिए कई कप चाय बनाई। फिर मैंने परिसर में बने छोटे से कुएं से पानी निकाला, ताकि ठंडे पानी से नहाने का आनंद ले सकूं।
पांच बजे मैं शोलागा के साथ बैलूर गाँव लौटा, जहाँ मैंने उसे और जेकेन को निर्देश दिए कि वे और तीसरा शोलागा अगली सुबह इक्कीसवें मील के पत्थर पर स्थित चारागाह पर जाएँ। जब मैं बंगले पर लौटा तब तक सात बज चुके थे। उस रात मैं चैन से सोया, और किसी बाघ की दहाड़ ने भी मुझे नहीं विसर्जित किया। सुबह जल्दी ही मैं बाकी दो चारागाहों की जाँच के लिए निकल पड़ा। दोनों जगह बाघ सुरक्षित थे।
फ़ॉरेस्ट लॉज लौटकर मैंने सादा भोजन किया और फिर बैलूर की ओर चल पड़ा, रास्ते में बाघ के पदचिह्नों पर सावधानीपूर्वक नज़र रखता रहा। कोई बाघ उस रास्ते से नहीं गुजरा था और सुबह 9:15 बजे मैं अपने साथियों का इंतज़ार कर रहा था। वे दस बजे से पहले लौट आए, इस बार यह बताने के लिए कि बाघ ने रस्सी को काटकर चारा हटा दिया था।
सौभाग्य से मैं ऐसी स्थिति के लिए तैयार था और अपने साथ टॉर्च और रात में शिकार करने का अन्य सामान एक थैले में लाया था। हम जितनी जल्दी हो सके वापस भागे और दोपहर के कुछ ही समय बाद उस जगह पहुँच गए जहाँ बैल को बाँधा गया था। लगभग बीस फीट दूर नरम मिट्टी में बाघिन के पैरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे, और जाँच करने पर पता चला कि हत्यारा बाघिन थी, न कि कोई बाघ। वहीं से उसने बैल पर अंतिम हमला किया था, जिससे बैल की मृत्यु हो गई थी, उसने उस रस्सी को काट दिया था जिससे उसका पैर बाँधा गया था।
हमें पता नहीं था कि शिकार कितनी दूर ले जाया गया है, इसलिए मैंने अपने साथियों से कहा कि वे दोपहर 3 बजे तक इक्कीसवें मील के पत्थर के पास मेरा इंतज़ार करें, जबकि मैं घसीटने के निशान का पीछा करूँगा। अगर मृत बैल को कुछ दूर ले जाया गया होता, तो मैं बाघिन के लौटने का इंतज़ार करने के लिए एक छिपने की जगह बना लेता और पूरी रात वहीं बिताता। ऐसी स्थिति में, मैं तीन बजे तक वापस नहीं आ पाता और उन्हें बैलूर लौट जाना होता। दूसरी ओर, अगर बाघिन ने शिकार को ज़्यादा दूर नहीं छोड़ा होता, तो मैं अपने साथियों के पास लौट आता और उनसे एक अच्छी तरह से मचान बनाने को कहता।
मैंने देखा कि बाघिन शिकार को पहले दो सौ गज तक आधा घसीटती रही, तब तक वह निचले इलाके और नाले के आसपास उगे बांस के घने जंगल से निकल चुकी थी। फिर उसे घनी लैंटाना की झाड़ियाँ मिलीं, जो जाहिर तौर पर उसके रास्ते में रुकावट बन गईं, क्योंकि वह मरे हुए बैल को ढो रही थी। यहाँ उसने जाहिर तौर पर उसे अपने कंधे पर लाद लिया, जैसा कि बाघ कभी-कभी अपने शिकार को ले जाने के लिए करते हैं, और फिर उसके निशान का पीछा करना बेहद मुश्किल हो गया। किसी जानवर के खुर घसीटने या बैल के सींगों से जगह-जगह टहनियाँ टूट गई थीं, और यही उनके गुजरने के एकमात्र दिखाई देने वाले निशान थे। सड़ती हुई वनस्पति और गिरे हुए लैंटाना के पत्तों की चादर ने पगडंडियों के निशान ढूंढने की सारी उम्मीदें खत्म कर दी थीं। स्वाभाविक रूप से, चलना भी बहुत धीमा था, और मुझे यह स्थिति बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रही थी, क्योंकि मेरा लगभग पूरा ध्यान पगडंडी का पीछा करने पर ही केंद्रित था, जिससे मैं अचानक हमले से पूरी तरह सावधान नहीं रह पा रहा था। अंत में लैंटाना की घास खत्म हुई और खुला जंगल शुरू हो गया, जिसमें जगह-जगह पेड़ और बौने खजूर के पेड़ फैले हुए थे।

हालाँकि उसे वहाँ घात लगाकर बैठे हुए बारह घंटे से अधिक समय बीत चुका था और वह मेरे आने का इंतजार कर रहा था।
फिर भी कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि ईश्वरीय विधान, मार्गदर्शक शक्ति, अंतर्ज्ञान या छठी इंद्री जैसी कोई चीज नहीं होती; आप इसे जो चाहें कह लें। मुझे तो ईश्वरीय विधान को समझने से भी ज्यादा मुश्किल इन अविश्वासियों को समझना लगता है!

सात

मुदियानूर का महान पैंथर मुडियानूर एक छोटे से गांव का नाम है जो मोयार नदी और नीलगिरी पर्वत श्रृंखला की ऊँची चोटियों के उत्तर में और बिलिगिरिरंगन के नाम से जानी जाने वाली छोटी पर्वत श्रृंखला की तलहटी के दक्षिण में स्थित एक उपजाऊ घाटी के दक्षिण-पूर्वी छोर के पास बसा हुआ है।
इस अशांत धरती पर यह छोटी सी घाटी काल्पनिक कहानियों की उन मायावी 'सुखद घाटियों' के जितना संभव हो सके उतना करीब आती है, जिनके सपने हम अपनी बेचैन नींदों में देखते हैं। यह निश्चित है कि दोनों छोरों पर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं के कारण कमजोर मानसून के मौसम में भी वर्षा अवश्य होगी। मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है, विशेष रूप से पत्तों की खाद और महीन लाल दोमट मिट्टी से भरपूर है, क्योंकि हाल के वर्षों तक यह उस प्राचीन जंगल का हिस्सा थी जिसे सभ्यता के विस्तार के कारण धीरे-धीरे, लेकिन निरंतर रूप से पीछे धकेला जा रहा है। दिन के समय जलवायु समशीतोष्ण रहती है और रात में पर्वतीय चोटियों से बहने वाली ठंडी हवाओं के कारण काफी सर्द हो जाती है। मुडियानूर के अधिकांश लोग किसान हैं, हालांकि कुछ लोग पशुपालक भी हैं, जो पशुओं के विशाल झुंड पालते हैं और उन्हें दिन के समय आसपास के जंगलों में चराने के लिए ले जाते हैं। इन पशुओं के दूध का उपयोग पूरी तरह से घी बनाने में किया जाता है, जो पिघला हुआ मक्खन होता है और पूरे भारत में खाना पकाने में इस्तेमाल होता है। मिट्टी के तेल के डिब्बों में भरा घी पहाड़ी पर बने घुमावदार रास्ते (जिसे घाट कहा जाता है) से ऊपर भेजा जाता है, जहाँ यह रास्ता डिंबम नामक छोटे से गाँव में मैसूर से सत्यमंगलम जाने वाली मुख्य सड़क से मिलता है। वहाँ घी के डिब्बों को बैलगाड़ियों—और कभी-कभी ट्रकों — पर लादकर बिक्री के लिए ले जाया जाता है। मैसूर और सत्यमंगलम में, और विशेष रूप से पास के शहर गोबिचेट्टीपलयम में, घी के अच्छे बाज़ार हैं। इसलिए यहाँ की आबादी खुशहाल और समृद्ध है। घाटी में बहुत कम ही विदेशी आते हैं, क्योंकि बैलगाड़ी का रास्ता लगभग मोटरगाड़ियों के चलने लायक नहीं है।
कभी-कभी बाघ या तेंदुआ झुंडों पर हमला कर देते हैं; तो कभी किसान सुबह उठकर देखते हैं कि रात भर चरने वाले हाथियों ने उनके खेतों के कुछ हिस्सों को रौंद डाला है। जंगली सूअर और हिरण फसलों को मामूली नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन इन्हें छोटी-मोटी आपदाएँ माना जाता है और इन्हें अपरिहार्य भाग्य का नियम समझकर स्वीकार कर लिया जाता है।
इस ‘महान पैंथर’ का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह अपने असाधारण रूप से बड़े आकार के कारण जाना जाता था। माना जाता था कि यह नीले पहाड़ों के दुर्गम इलाकों से आया था, शायद अनाइकुट्टी या सेगुर से, और मोयार नदी (जिसे आमतौर पर मैसूर खाई कहा जाता है) के पार से आया था। इसने गाँव के मवेशियों पर हमला करना शुरू कर दिया, और बाघ की तरह गर्दन तोड़कर उन्हें मार डाला, इसलिए कुछ समय तक इसे बाघ ही समझा जाता रहा।
फिर, बढ़ते साहस के साथ, यह पैंथर मेरे मित्र ह्यूगी हेलस्टोन की जागीर में मौजूद उत्तम दुधारू गायों के झुंड को परेशान करने लगा। यह जागीर, मोयार वैली रेंच, एक उत्कृष्ट फार्म है, जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि इसके मालिक एक असाधारण व्यक्तित्व हैं। पेशे से एक प्रतिभाशाली इंजीनियर, उनका दिमाग

विश्वास है। आशीर्वाद असल में बांस के एक छोटे टुकड़े में लिपटा हुआ है, जिसे हाथी की पूंछ के बाल से बांधा गया है। इसके अंदर क्या है, यह मुझे नहीं पता। इसे गले में पहना जा सकता है, क्योंकि बांस एक डोरी से बंधा हुआ है, लेकिन पिताजी आमतौर पर इसे अपनी जेब में रख लेते हैं।
जाने से ठीक पहले मैंने अपने एक और दोस्त, सेड्रिक बोन को साथ ले जाने का सोचा। वह एक शौकीन फोटोग्राफर और अच्छे स्वभाव का व्यक्ति है, और मुश्किल परिस्थितियों में भी शानदार ढंग से रह सकता है। सेड्रिक आने के लिए तैयार हो गया, और जल्द ही हम तीनों मुडियानूर के लिए निकल पड़े। मैं अपने साथ .423 माउज़र राइफल ले गया, जो पिताजी की पुरानी.405 विंचेस्टर राइफल से कहीं बेहतर है। वह खुद यह जानते हैं, लेकिन सभी पुराने ख्यालों वाले लोगों की तरह, उन्हें भी पुरानी चीज़ों से चिपके रहना पसंद है। मैं अपने साथ .3006 स्प्रिंगफील्ड राइफल भी लाया था, जिसे मैं खाने के लिए हिरण का शिकार करने के लिए रिजर्व राइफल के रूप में रखता था। मेरे पिताजी मुझे हिरण मारने के खिलाफ उपदेश देते रहते हैं और मैं उनकी बात सुनने का नाटक करता हूँ। जब वह आस-पास होते हैं, तो बेशक, ऐसा करना वर्जित है; लेकिन जब वह नहीं होते, तो मामला बिल्कुल अलग होता है।
'मुदियानूर जाने वाले रास्ते के आखिरी सत्रह मील बहुत खराब थे, और हमें वहाँ पहुँचने में लगभग आठ घंटे लग गए। वर्गीस ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया, हालाँकि मुझे लगा कि वह थोड़ा निराश था क्योंकि पिताजी साथ नहीं आए थे। आजकल यही समस्या है। मेरे जैसे युवाओं की अक्सर कद्र नहीं की जाती और बड़े-बुजुर्ग हमें कुछ हद तक गैरजिम्मेदार समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे भी कभी जवान थे।'
खैर, वर्गीस ने हमें बताया कि गाँव के मवेशियों के अलावा, उस बड़े पैंथर ने तीन दिन पहले श्री हेलस्टोन की एक गाय को भी मार डाला था। इसलिए तत्काल समस्या यह थी कि कुछ अधपके बैलों के रूप में जीवित चारा खरीदा जाए, और इस उद्देश्य के लिए रुस्तम बहुत काम आया।
‘मैं आपको रुस्तम के बारे में कुछ बताता हूँ। वह बाईस साल का है और पारसी है, जो भारत में शुरुआती फारसी प्रवासियों के वंशज हैं। वह एक बहुत अमीर परिवार से आता है, जिसके पास मुंबई में लाखों रुपये की संपत्ति है, जिससे एक दिन में इतनी आमदनी होती है कि मुझे कई बार खरीदा जा सकता है। इसके अलावा, रुस्तम के पिता एक चतुर व्यापारी हैं, जिनकी आमदनी संपत्ति से होने वाली मासिक आमदनी से भी अधिक है। वह बहुत ही खेल प्रेमी हैं और अपने बेटे से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन कभी-कभी रुस्तम को शिकार पर जाने देने के मामले में वे बेवजह सख्त हो जाते हैं। जब ऐसा होता है, तो रुस्तम और मैं आमतौर पर अपने पिता को श्री दुधवाला से मिलने के लिए आमंत्रित करने का जुगाड़ कर लेते हैं, क्योंकि जब ये बुजुर्ग मिलते हैं और एक-दो घंटे बातचीत करते हैं, तो हमारी शिकार यात्रा पक्की हो जाती है।’
खैर, मैं आपको जो बता रहा था, उस पर वापस आते हैं। रुस्तम चार जवान बैल लाया, जिन्हें हमने उस जगह के पास अलग-अलग जगहों पर बांध दिया, जहाँ हाल ही में उस बड़े पैंथर ने शिकार किया था। इनमें से पहला हमने जंगल की सीमा रेखा के पास बांधा, जो श्री हेलस्टोन की जागीर से सटी हुई है। दूसरा हमने लगभग एक चौथाई मील दूर, घने बांस के जंगल से घिरी एक छोटी झील के पास बांधा। तीसरा हमने मुडियानूर गाँव के बाहरी इलाके में बांधा, और आखिरी मुडियानूर में आने वाले बैलगाड़ी के रास्ते पर ही बांधा। पिताजी हमेशा चारे के साथ अपना मचान लगाते हैं; लेकिन चूंकि वर्गीस ने श्री हेलस्टोन के पोर्टेबल

मचान का उपयोग करने की पेशकश की थी, इसलिए मैंने शिकार होने के बाद ही अपना मचान लगाने का फैसला किया।
हमने अपने शिकार को सुरक्षित रखने के लिए उसके पिछले पैरों को जमीन में गाड़े गए मजबूत खूंटों से बांध दिया, क्योंकि जीवित शिकार के गले में रस्सी डालना एक गलती होती है। कभी-कभी तेंदुआ, और खासकर बाघ, गले में रस्सी बंधे जानवर पर हमला करने से हिचकिचाते हैं। वे गर्दन पकड़कर मारते हैं, और रस्सी को लेकर वे संशय में रहते हैं, क्योंकि यह उनके रास्ते में बाधा बन सकती है।
आखिरी समय में वर्गीस ने हमें बताया कि पिछले दो दिनों से बंगले के आसपास एक बाघ मंडरा रहा था। इसलिए, मैंने रस्सी की जगह श्री हेलस्टोन की चेन का इस्तेमाल उनके बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे चारे को सुरक्षित करने के लिए किया। ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे लगा कि अगर बाघ इस बैल को मार देता है तो वह रस्सी तोड़कर उसे ले जा सकता है। चूंकि कोई और चेन नहीं थी, इसलिए बाकी तीन चारे रस्सी से ही बंधे रहने दिए गए।
रुस्तम उस रात मुडियानूर गाँव के आसपास के खेतों में जंगली सूअर का शिकार करने जाना चाहता था, लेकिन मैंने उसे रोक दिया, क्योंकि गोली चलने से पैंथर घबरा सकता था। अगली सुबह, हमारे चारों शिकार ज़िंदा थे और हम निराश हो गए। लेकिन जैसा कि पिताजी ने मुझे सिखाया है, शिकार धैर्य का खेल है, इसलिए मैंने रुस्तम को चुप रहने और एक-दो दिन तक किसी भी प्रगति की उम्मीद न करने को कहा। तीसरी रात को बड़े तेंदुए ने बंगले के पास जंगल की सीमा पर बंधे बैल को मार डाला। संयोग से उसी रात बाघ ने जंगल के तालाब के पास बांसों के बीच बंधे दूसरे शिकार को भी मार डाला।
अब मेरे सामने एक मुश्किल खड़ी हो गई थी। मैंने मन ही मन कहा, “पैंथर भाड़ में जाए, मैं बाघ को मारूंगा।” लेकिन कुछ और बातें भी ध्यान में रखनी थीं: रुस्तम ने मुझे याद दिलाया कि मेरा मकसद उस पैंथर को मारना था जिसने मिस्टर हेलस्टोन के मवेशियों को मार डाला था। इसलिए पैंथर का शिकार करना मेरी ज़िम्मेदारी थी। मुझे पता था कि वह सही कह रहा है और पिताजी भी यही कहते। फिर भी, बाघ का शिकार करने का मौका गंवाना मुझे थोड़ा मूर्खतापूर्ण लग रहा था, और मैंने रुस्तम को पैंथर का शिकार करने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की। लेकिन उसमें अपने पिता की कुछ व्यावसायिक समझ थी, और वह अपनी पुरानी दलीलों पर अड़ा रहा। इसलिए, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं फंस गया हूं, तो मुझे हार माननी पड़ी।
'सेड्रिक ने मेरे साथ आकर बैठने का फैसला किया, क्योंकि उसे लगा कि मेरे साथ रहने से बड़े पैंथर को देखने की संभावना रुस्तम के साथ जाने की तुलना में अधिक है। उसे लगा कि रुस्तम बहुत शोर मचाएगा और बाघ के शिकार के पास आने से पहले ही उसे भगा देगा।'
तो मैंने काम शुरू किया और श्री हेलस्टोन का पोर्टेबल मचान उस पेड़ पर टांग दिया जो मरे हुए बैल से लगभग तीस गज की दूरी पर था। रुस्तम ने भी ग्रामीणों से उस पेड़ पर मचान लगवाया जो उस जगह के पास था जहाँ दूसरे बैल को बाघ ने मारा था। मैं यह बताना भूल गया था कि इन चारों चारों को बांधते समय मैंने सावधानी बरती थी और उन्हें पेड़ों के पास बांधा था, ताकि बाद में मचान लगाने में कोई परेशानी न हो।
दोनों दल शाम करीब 4 बजे बंगले से निकले। रुस्तम को लंबी दूरी तय करनी थी, इसलिए वह और वर्गीस, अपने साथ सैंडविच, पानी की बोतल, टॉर्च, गर्म मफलर, कंबल और अन्य सामान लेकर तेज़ी से चल पड़े। सेड्रिक और मैं अपने खाने के

हम वहां करीब एक घंटे और बैठे रहे। मच्छर इतने असहनीय हो गए कि हमने नीचे उतरकर बंगले में वापस जाने का फैसला किया। मैं पहले नीचे उतरा और सेड्रिक ने मुझे राइफल थमा दी। फिर वह पानी की बोतल लेकर मेरे पीछे आया। आखिरी छह फीट उसने छलांग लगाकर पार किए और जैसे ही वह धड़ाम से जमीन पर गिरा, पास से एक भयानक दहाड़ सुनाई दी। मैं मुड़ा और टॉर्च जलाकर राइफल को आवाज की दिशा में तान दिया, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ मिनट इंतजार करने के बाद, हम कुछ कदम आगे बढ़े, लेकिन वहां लैंटाना की झाड़ियाँ बहुत घनी थीं और अंधेरे में आगे बढ़ना असुरक्षित लग रहा था। फिर हम उस जगह गए जहां पैंथर बैठा था जब मैंने गोली चलाई थी, और खून के निशान ढूंढने लगे।
टॉर्च की रोशनी में कोई निशान नहीं दिख रहा था और मेरे मन में यह चिंताजनक ख्याल आया कि शायद मेरी गोली पैंथर को पूरी तरह से चूक गई हो। मैंने दबी आवाज़ में सेड्रिक से इस बारे में बात की, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि मेरी गोली पैंथर को लगी थी। फिर भी, मुझे संदेह था और आखिरकार हमने मचान पर वापस जाने का फैसला किया, इस बहुत कम संभावना के साथ कि शायद मेरी गोली चूक गई हो और पैंथर बाद में अपने शिकार के पास लौट आए।
मच्छरों और सुबह होते ही शुरू हो चुकी भीषण ठंड के कारण बाकी की रात बेहद असहज रही। फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी और भोर होते ही हम दोनों बेहद उदास और निराश हो गए। हम पेड़ से नीचे उतरे और लगभग एक घंटे तक नीचे हरी घास पर लेट गए, ताकि सूरज को उगने का मौका मिले और हमारी अकड़ी हुई मांसपेशियां ढीली हो जाएं। फिर, सात बजने के कुछ ही देर बाद, हमने गंभीरता से खून के निशान ढूंढना शुरू किया। थोड़ी देर में मुझे तसल्ली मिली जब मुझे कुछ बूंदें मिलीं जहाँ पैंथर लैंटाना में घुसा था, और फिर झाड़ियों के अंदर लगभग चालीस गज की दूरी पर काफी मात्रा में खून मिला। अब यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया था कि उसे बुरी तरह चोट लगी थी और वह यहीं लेट गया था; और यह भी कि पिछली रात जब सेड्रिक पेड़ से नीचे कूदा था, तब इतनी जोर से गुर्राने वाला वही पैंथर था। दरअसल, यह समझ में आया कि पैंथर ने उस समय हम पर हमला नहीं किया था और हमें सोते हुए पकड़ लिया था।
'सेड्रिक ने उस जगह की तस्वीर खींची। वह उन कैमरा प्रेमियों में से एक है जो लगभग हर चीज की तस्वीरें खींचते हैं।'
मैंने देखा कि इस बिंदु से सौ गज से भी अधिक दूरी तक खून का निशान दिखाई दे रहा था। इस दूरी के भीतर वह एक बार फिर लेट गया, जिससे यह पुष्टि हो गई कि उसे गंभीर चोट लगी थी। फिर खून का निशान धुंधला हो गया, शायद इसलिए कि वसा, या झिल्ली के एक टुकड़े ने गोली के छेद को ढक लिया था और बाहरी रक्तस्राव को रोक दिया था।
'झाड़ियाँ काफी घनी थीं और हमने हर जगह ध्यान से तलाशा, लेकिन कोई पैंथर नहीं मिला। जंगल की सीमा रेखा आगे बढ़ती रही, और मैं उसके किनारे-किनारे चलता रहा, लैंटाना की झाड़ियों में झाँकते हुए उस जानवर को देखने की उम्मीद कर रहा था।'
मैं शायद सौ गज और आगे बढ़ गया था, सेड्रिक लगभग बीस कदम की दूरी पर अपने कैमरे के साथ जंगल की खुली सीमा के किनारे-किनारे चल रहा था, तभी अचानक यह घटना घटी। ज़ाहिर है, पैंथर खुले मैदान के दूसरी तरफ एक झाड़ी के नीचे छिपा हुआ था और मेरी नज़र से बच गया था। उसने मेरे गुज़र जाने का इंतज़ार किया और फिर, अपनी खास खाँसी भरी आवाज़ के साथ, मुझ पर हमला कर दिया। सेड्रिक लगभग उसी जगह पर था जहाँ पैंथर छिपा हुआ था, और यह एक रहस्य है कि कैसे पैंथर ने उसे नहीं देखा और मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला कर दिया, और

यह सेड्रिक के लिए बहुत बड़ी किस्मत की बात है। शायद पैंथर मुझे देखने और अपने अचानक हमले की तैयारी में व्यस्त था। खैर, उसने हमला तो किया, लेकिन उस खाँसी भरी आवाज़ को सुनकर मैं समय रहते पलट गया और उसे आते हुए देख लिया। सौभाग्य से, पिछली रात मेरी चलाई गोली ने उसके दाहिने अगले पैर को चकनाचूर कर दिया था, जो घिसटता हुआ आगे बढ़ता गया।
मैंने अपनी राइफल को अपने बाएं कंधे पर रखा—जहां से मैं गोली चलाता हूं— मैंने ट्रिगर दबाया और गोली उसके गले में जा लगी। वह आगे की ओर सीने के बल गिर पड़ा, अभी भी जोर से गुर्रा रहा था, और इससे मुझे दूसरी गोली चलाने का समय मिल गया।
तभी मैंने देखा कि सेड्रिक मेरे ठीक पीछे था और उत्साह से झूम रहा था। वह मेरी सीधी गोलीबारी की चपेट में आ गया था, और हो सकता है कि मैंने पैंथर की जगह उसे ही गोली मार दी होती। लेकिन इस अद्भुत उत्साही ने हमले की तस्वीर खींच ली। सेड्रिक में इतनी हिम्मत कैसे आई कि उसने तस्वीर खींची, जबकि सौ में से निन्यानवे आदमी, जो उसके जैसे निहत्थे थे, दुम दबाकर भाग जाते, यह मेरी समझ से परे है। इससे बस यही पता चलता है कि फोटोग्राफी के प्रति उसके जुनून ने उसे बाकी सब कुछ भुला दिया। वह मुझे बताता है कि उसने बस कैमरा निशाना लगाया और बिना सोचे-समझे शटर दबा दिया।
जब हम खुशखबरी सुनाने के लिए बंगले पर लौटे, तो हमने पाया कि रुस्तम और वर्गीस पहले ही वापस आ चुके थे, वे लगभग 2 बजे तक जागे रहे थे। इस समय तक मच्छर उन पर हावी हो चुके थे, और चूंकि बाघ दिखाई नहीं दिया था, इसलिए रुस्तम और उसके साथी ने दिन का काम समाप्त करने और झपकी लेने के लिए बंगले पर वापस जाने का फैसला किया था।
'हम पैंथर को नौ बजे तक अंदर ले आए और लगभग एक घंटे में उसकी खाल उतार ली। यह काफी बड़ा नर पैंथर निकला, जिसकी नाक से पूंछ तक की लंबाई 7 फुट 8 इंच थी।' दोपहर का भोजन जल्दी करने के बाद, मैंने रुस्तम से कहा कि हमें उस बैल को देखने जाना चाहिए जिस पर वह बैठा था। मैं आपको यह बताना नहीं भूलूंगा कि इस बीच, वर्गीस ने तीसरे और चौथे जानवर का पता लगाने के लिए कुछ लोगों को भेजा था। वे लोग लौटकर हमें यह सूचना देने आए कि दोनों जानवर अभी भी जीवित हैं। जब हम रुस्तम के मचान पर पहुँचे, तो हमने पाया कि बाघ अपने शिकार के पास लौट आया था, संभवतः रुस्तम के नीचे उतरने के बाद सुबह तड़के। शायद वह देख रहा था और उसे पता चल गया था कि रुस्तम ऊपर है। बाद में जब आसपास कोई नहीं था, तो वह देर रात का भोजन करने वापस आया था। बैल का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा खा चुका था।
रुस्तम बेहद निराश था, लेकिन उसने फिर से उठने का पक्का इरादा कर लिया था। तभी मुझे एक विचार आया। समझदारी से, या नासमझी से, मैंने वर्गीस को एक आदमी के साथ हमारा चौथा चारा लाने भेजा, जिसे मुडियानूर गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर बाँधा गया था। उस जानवर को लाने में लगभग दो घंटे लगे, और हमने उसे पुराने शिकार के अवशेषों से लगभग तीस कदम दूर बाँध दिया। ऐसा करने के पीछे मेरी यह उम्मीद थी कि अगर बाघ पुराने शिकार पर लौटने में हिचकिचाए, जो दो दिन से मरा पड़ा था और बुरी तरह बदबू मार रहा था, तो शायद वह उस पर हमला कर दे। रुस्तम ने इस योजना का विरोध किया, क्योंकि उसे लगा कि बाघ एक दिन पहले मरे हुए बैल की जगह एक ज़िंदा बैल को देखकर डर जाएगा। लेकिन मुझे लगा कि जोखिम लेना उचित होगा।
शाम करीब 5:30 बजे, हम तीनों, रुस्तम, सेड्रिक और मैं, मचान में घुस गए। हमने पहले से ही छिपने के लिए ताज़ी हरी पत्तियाँ बिछा रखी थीं, क्योंकि

‘हमने आधे घंटे और इंतज़ार किया, लेकिन जानवर में कोई हलचल नहीं हुई; इसलिए हम मचान से नीचे उतर गए, टॉर्च की रोशनी बाघ पर ही टिकाए रखी। लेकिन वह ज़रा भी नहीं हिला। यह स्पष्ट था कि बाघ मर चुका था। जाँच करने पर रुस्तम यह देखकर बहुत खुश हुआ कि उसने एक शानदार नर बाघ को मार गिराया था, जिसकी लंबाई नाक से पूंछ तक 9 फुट 4 इंच थी।’
और इस तरह हम बेहद खुश होकर बैंगलोर लौट आए। रुस्तम को उसका बाघ मिल गया था, और मैं श्री हेलस्टोन के जानवरों को परेशान कर रहे पैंथर को मारने में कामयाब हो गया था। लेकिन हम तीनों में से मुझे लगता है कि सेड्रिक बोन सबसे ज्यादा खुश था क्योंकि उसने एक बेहद भाग्यशाली तस्वीर खींची थी और एक भयानक हमले से बाल-बाल बच गया था, अगर पैंथर ने मुझ पर हमला करने के बजाय उस पर हमला किया होता तो उसकी जान भी जा सकती थी।
मैंने पिताजी को पूरी कहानी सुनाई और उन्होंने हम दोनों को बधाई दी। लेकिन उस समय उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि सेड्रिक पैंथर और मेरी राइफल की गोली से बाल-बाल कैसे बचा था।
अगले दिन, जब उन्होंने तस्वीर देखी, तो उन्होंने बहुत सी अपमानजनक बातें कहना शुरू कर दिया। उस समय मुझे लगा कि वे कुछ ज्यादा ही कठोर और अनुचित थे; लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह बूढ़ा आदमी सही था।
‘मैंने दो बड़ी गलतियाँ की थीं। पहली, मैंने झाड़ियों में ठीक से नहीं देखा था और पैंथर को देखे बिना ही उसके पास से गुजर गया था। दूसरी, उत्तेजना में मैंने सीधे अपनी गोली की दिशा में लगभग बीस कदम की दूरी पर खड़े एक इंसान पर गोली चला दी थी। कहते हैं कि किस्मत नौसिखिए का साथ देती है, और इस मामले में भी ऐसा ही हुआ।’

आठ

राजनगर का हमलावर इस कहानी को सुनाए जाने के समय (नवंबर 1995), वह 'खूंखार जानवर' अभी भी जीवित है, और उसे पकड़ने के मेरे सभी प्रयासों को विफल कर चुका है। न केवल मेरे प्रयासों को, बल्कि दो साल से अधिक समय तक कई अन्य शिकारियों के प्रयासों को भी।
यह हमलावर बाघ अपने आप में एक अनोखा बाघ है, क्योंकि इसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग हैं और यह ऐसे इलाकों में रहता है जहाँ कई सालों से किसी बाघ के होने का कोई आभास नहीं है। इसकी आदतें बाघों से अलग इसलिए हैं क्योंकि इसके पहले के रिकॉर्ड में केवल मनुष्यों को अपने अगले पैरों से खरोंचकर घायल करने तक ही सीमित हैं। इस बाघ द्वारा किए गए ऐसे हमलों के तैंतीस मामले दर्ज हैं, जिनमें इसके शिकार मुख्य रूप से चरवाहे थे। किसी भी मामले में इसने अपने शिकार को न तो काटा और न ही मारा। हर मामले में इसने आदमी के सिर से लेकर चेहरे और गर्दन तक, और छाती और पीठ पर बुरी तरह खरोंचें मारीं। इस व्यवहार को देखकर पहले तो मुझे लगा कि जिसे बाघ कहा जा रहा था, वह असल में एक 'तेंदुआ' ही था। लेकिन बाद में जब मैंने उसके कई पीड़ितों से पूछताछ की, तो उन सभी ने पुष्टि की कि हमला करने वाला बाघ ही था, न कि कोई तेंदुआ। मुझे यह भी लगा कि जानवर के जबड़े, मुंह या चेहरे के किसी हिस्से में चोट लगी होगी, जिससे वह अपने शिकार को काटकर पूरी तरह से हमला नहीं कर पाया होगा। चरवाहों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज कर दिया और बताया कि दो साल के दौरान उसी बाघ ने उनके दो सौ से अधिक मवेशियों को मारकर खा लिया था। उन्होंने घटना के बाद कई शिकारों की जांच की थी और किसी भी मामले में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे यह पता चले कि बाघ अपने दांतों का ठीक से इस्तेमाल करने में असमर्थ था। उसने न केवल बाघों की तरह गर्दन तोड़कर अपने शिकार को मारा था, बल्कि प्रत्येक जानवर को बहुत ही सामान्य और पूरी तरह से खाया था।
इस जानवर के बारे में अगली अजीब बात यह थी कि उसने अपने शिकार की शुरुआत जंगल के एक ऐसे हिस्से से की थी जो बाघों के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त था, जिसमें छोटी झाड़ियाँ और कांटेदार वनस्पतियाँ थीं: पथरीली, लहरदार पहाड़ियाँ जिनके बीच-बीच में पत्थरों से भरी हुई खड़ी ढलान वाली छोटी नदियाँ बहती थीं, जिनके किनारों पर लंबी घास और कहीं-कहीं बांस के झुंड थे। यह ज्ञात था कि इस क्षेत्र में अक्सर पैंथर घूमते थे, और उन्हें यहाँ से गुजरने वाली मुख्य सड़क पर भी देखा गया था; लेकिन बाघ के बारे में मौजूदा पीढ़ी को कोई जानकारी नहीं थी।
यह वन क्षेत्र उत्तरी कोयंबटूर जिले में डिंबम ढलान के ठीक दक्षिण में स्थित है। डिंबम से 2,500 फीट से अधिक की तीव्र ढलान आपको इस शुष्क झाड़ीदार क्षेत्र में ले जाती है, जहाँ जगह-जगह ताड़ के पेड़ दिखाई देते हैं और मुख्य रूप से कांटेदार झाड़ियाँ और लैंटाना झाड़ियाँ पाई जाती हैं। अन्य वन्यजीव भी दुर्लभ हैं, जिनमें कुछ मोर और कभी-कभार दिखने वाली जंगली भेड़ें ही शामिल हैं। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा है, उत्तर से दक्षिण तक लगभग पाँच मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग तीस मील लंबा है, जहाँ यह भवानी नदी से मिलता है, जो अंततः कावेरी नदी में मिल जाती है।

फिर मैं और मेरा साथी सड़क छोड़कर जंगल में चले गए। पूरे रास्ते हमें हाल ही में घायल हुए उस आदमी के खून के छींटे दिखाई दिए। चट्टानी इलाके को पार करते समय ये छींटे बहुत अधिक थे, जिससे मुझे एहसास हुआ कि मेरी जल्दबाजी में हुई बातचीत के दौरान मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक गंभीर रूप से वह घायल हुआ था। मुझे लगने लगा कि मुझे उसे अपनी कार में सत्यमंगलम ले जाना चाहिए था, जहाँ अस्पताल था, बजाय इसके कि उस बेचारे को जैसे-तैसे वहाँ पहुँचने के लिए छोड़ दूं। हालाँकि, मेरी इस लापरवाही के बावजूद, मेरे पास उस बाघ से आमने-सामने मिलने और हिसाब बराबर करने का एक अनूठा अवसर था। थोड़ी देर बाद हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघ ने उस आदमी पर हमला किया था। पगडंडी पर पड़ी रेत खुद ही कहानी बयां कर रही थी। हम उस जगह को खोजने लगे जहाँ बाघ ने भूरे बैल को मारा था, और जल्द ही वह जगह लगभग तीस गज दूर मिल गई। मेरा साथी अब आगे जाने से मना कर रहा था, और मैं भी नहीं चाहता था कि वह जाए, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से बहुत डरा हुआ था और आगे जाना उसके लिए मददगार से कहीं ज़्यादा बोझ होता। इसलिए मैंने उसे घबराया हुआ वहीं छोड़ दिया और बाघ द्वारा बनाए गए घसीटने के निशान का पीछा करने लगा। बाघ उस भूरे बैल को घसीटते हुए नीचे की ओर उस खाई की तरफ ले गया था जो उस छोटी पहाड़ी और एक चौथाई मील दूर स्थित एक और ऊँची पहाड़ी के बीच थी।
दुर्भाग्य से, मैंने इतनी जल्दी कार्रवाई की उम्मीद नहीं की थी, और शिकार के लिए मैं जिन रबर के तले वाले बूटों को पसंद करता था, उनके बजाय मैंने साधारण चमड़े के जूते पहने हुए थे। लाख कोशिश करने के बावजूद, ये जूते कठोर ज़मीन और बिखरे हुए पथरीले पत्थरों पर आवाज़ कर रहे थे। फिर भी, मैं जितना हो सके चुपचाप चलता रहा, जब तक कि मैं नाले के पास नहीं पहुँच गया। फिर मैं रुका और चारों ओर देखा। यहाँ झाड़ियाँ बहुत घनी थीं, और जहाँ नाला वास्तव में घुमावदार था, वहाँ और भी घनी हो गई थीं। मेरी नज़र सामने वाली छोटी पहाड़ी की ढलानों पर पड़ी, जो काफ़ी खुली हुई थीं। बाघ या बैल का कोई निशान दिखाई नहीं दिया, और यह स्पष्ट था कि उसने उसे नाले में कहीं छिपा रखा होगा, और संभवतः इस समय उसे खा रहा होगा। अगर वह वास्तव में उसे नहीं खा रहा था, तो वह निश्चित रूप से आसपास कहीं लेटा होगा।
मेरे जूतों ने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया था और वे उस नाले की ओर मेरी प्रगति में बाधक साबित हो सकते थे। अगर मैं उन्हें उतारकर मोजे पहने हुए आगे बढ़ने की कोशिश करता, तो लगभग निश्चित रूप से किसी कांटे पर पैर पड़ जाता, और चारों ओर बिखरे नुकीले पत्थरों की तो बात ही छोड़िए। उसी समय, मुझे एहसास हुआ कि यह अवसर इतना अच्छा था कि इसे गंवाना नहीं चाहिए था, और इसे हर हाल में भुनाना चाहिए था। यह हज़ारों में एक मौका था, जो शायद मुझे दोबारा कभी न मिले। शाम के ठीक 5 बज रहे थे और सूर्यास्त में डेढ़ घंटा बाकी था।
जब मैं हालात पर विचार कर रहा था, तभी बाघ ने पहला वार किया। उसने मुझे साफ़-साफ़ सुन लिया था; शायद उसने मुझे देख भी लिया था। खैर, एक महान सेनापति की तरह उसने बगल से हमला करने का फैसला किया। मुझे ज़रा भी शक नहीं हुआ, वह उसी ढलान पर चढ़ गया था जहाँ से मैं नीचे आ रहा था, लेकिन थोड़े अलग कोण से, जिससे वह उस जगह के ऊपर और पीछे आ गया जहाँ मैं सोच रहा था। फिर वह पेट के बल रेंगता हुआ मेरी तरफ आया और मुझसे मुश्किल से दस फीट दूर एक बड़ी झाड़ी के पीछे छिप गया, और मुझे इसका बिल्कुल भी पता नहीं चला। इस मामले में, आने वाले खतरे को भांपने की मेरी छठी इंद्री बिल्कुल नाकाम रही। मैंने नाले की तरफ बढ़ने का फैसला ही किया था कि मेरे पीछे एक ज़ोरदार

Called upon to rid the affected locality of the prowling man-eaters, Anderson the hunter rises to the occasion. Step by step he takes the reader through the adventure, explaining his modus operandi and the terrible excitement and lurking danger. Stirring tales of wild animal's cunning pitted against human wit and presence of mind told by the ace hunter and master story-teller himself.

Kenneth Anderson (1910-74) hailed from a Scottish family settled in India for six generations. His love for the denizens of Indian jungle led him to big game hunting and eventually to writing real-life adventure stories. His book are hailed as classics of jungle lore.